प्रतिनिधि राष्ट्रीय गीत

सम्पादक
हरदान हर्ष 'जयपुरिया'

सम्पादक : हरदान हर्ष 'जयपुरिया'
प्रथम संस्करण : 1987
मूल्य : पैंतालीस रुपये
प्रकाशक : साहित्यागार
धामाणी मार्केट की गली
चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
मुद्रक : भूलेलाल प्रिन्टर्स
महर्षि दयानन्द मार्ग, जयपुर-2

सहर्ष
समर्पित
उन
रचनाकारों को
जिनकी रचनाएँ
यहाँ संकलित हैं ।

—हरदान हर्ष 'जयपुरिया'

सम्पादकीय

प्रिय पाठको, "प्रतिनिधि राष्ट्रीय गीत" का प्रथम सस्करण आपके हाथ मे है। मेरा प्रयत्न रहा है कि यह पुस्तक भारतवर्ष के विभिन्न पहलुओं का, हर काल, हर क्षेत्र एवं भारतीय भाषा में लिखे राष्ट्रीय गीतों का प्रतिनिधित्व करे। वैसे सीमित पृष्ठों में भारत जैसे प्राचीन, महान, विशाल, विविध राष्ट्र को प्रतिबिंबित करना गागर मे सागर भरने जैसा प्रयास है। आपकी सुविधा एवं पुस्तक को क्रम-बद्धता देने के लिए मैंने इस पुस्तक को तीन खण्डों में विभाजित किया है—भारत महिमा, भारत-विविध, एवं प्रेरणा के स्वर ।

श्री रमेश वर्मा, प्रकाशक, साहित्यागार की नवयुवको मे राष्ट्रीयता की भावना जगाने की ललक ने मुझे यह पुस्तक लिखने को प्रेरित किया है। रचनाओं की मधुरता, मंदर्भता, सीमित एवं यथार्थ विषयवस्तु के आधार पर रचनाओं को प्राथमिकता दी है। मैंने अपनी पुस्तक "भारत-दर्पण" के कुछ गीत भी इस सकलन मे लिए हैं।

आशा है मेरा यह प्रयास आपको पसंद आयेगा।

जयहिन्द ।

—हरदान हर्ष 'जयपुरिया'

प्रकाशकीय

हमारा उद्देश्य जन-चेतना एवं राष्ट्र-चेतना से सम्बन्धित साहित्य को आ
पाठकों के सामने लाना है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर उक्त पुस्तक 'प्रतिनि
राष्ट्रीय गीत' प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य के जाने-माने कवि
एवं गीतकारों की रचनाओं के साथ उर्दू के दिग्गज शायरों एवं नवोदित रचनाका
की रचनाएँ सकलित है।

श्री हरदान हर्ष 'जयपुरिया' हिन्दी साहित्य के नवोदित कवि, गीतक
एवं लेखक है। राष्ट्रीय भावनाओं को जगाना एवं नैतिक मूल्यों की प्रत्यास्थाप
उनका उद्देश्य है। हमें हर्ष है कि उनकी पुस्तक 'प्रतिनिधि राष्ट्रीय गीत' हम प्रकाशि
कर सके। हमारा विश्वास है कि अवश्य ही यह पुस्तक विद्यार्थियों, अध्यापकों ए
अन्य हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिए प्रेरणास्पद होगी।

—रमेश व

साहित्यागार
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
गली धामाणी मार्केट
चौड़ा रास्ता, जयपुर

भूमिका

श्री हरदान हर्ष जयपुरिया के संपादन में प्रकाशित "प्रतिनिधि राष्ट्रीय गीत" क्रमशः (अ) भारत महिमा (ब) भारत विविध (स) प्रेरणा के स्वर तीन भागों में विभक्त हैं।

यद्यपि इस संग्रह को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है, पर इसका मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना का जागरण और प्रेरणा है। इस संकलन में मैथिलीशरण गुप्त, मोहनलाल द्विवेदी, निराला, दिनकर, नवीन तथा गोपालसिंह नेपाली आदि राष्ट्रीय चेतना कवियों के गीत हैं। द्वितीय एवं तृतीय खण्ड में भी इन कवियों के अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि कवियों की रचनाएँ संकलित हैं। वास्तव में हरदान हर्ष ने एक विराट और महत्वाकांक्षी कार्य अपने हाथों में लिया है और प्रसन्नता की बात है कि वे किसी सीमा तक सफल भी हुए हैं। श्री हर्ष ने बंगाली के बंकिम चन्द्र चटर्जी, उर्दू के मुहम्मद इकबाल, तमिल के सुब्रह्मण्यम् भारती तथा राजस्थानी के कन्हैयालाल सेठिया जैसे विभिन्न भाषा-भाषी कवियों के राष्ट्रीय गीत इस संकलन में लिए हैं। वैसे ही गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के गीतों को भी सम्मिलित कर लिया जाता तो राष्ट्रीय, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक दृष्टि से, धरोहर के रूप में संजोया जा सकने वाला यह संग्रह एक संपूर्ण संग्रह कहलाता। श्री श्यामलाल पार्षद का "झण्डा गीत" इस संग्रह में न होना खटकता है। "झन्डा गीत" किसी जमाने में हमारी राष्ट्रीय अस्मिता और संघर्ष का प्रतीक बन गया था।

यद्यपि इस संग्रह की अपनी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि ऐसे एक नहीं अनेक संग्रहों की हमें आवश्यकता है। भविष्य में हर्ष जी ऐसे ही उद्देश्यपूर्ण संग्रह देंगे, ऐसी हमें आशा है। उनके इस अभिनव प्रयास के लिए मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

डॉ० विनोद गोदरे
अध्यक्ष-हिन्दी विभाग
बम्बई विश्वविद्यालय,
बम्बई-98

अनुक्रमणिका

खण्ड 'अ'

भारत महिमा

खण्ड 'ब'

भारत-विविध

खण्ड 'स'

प्रेरणा के स्वर

□ □

खण्ड 'अ'

भारत महिमा

राष्ट्र-गान

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता ।

पंजाब सिंधु गुजरात मराठा,
द्राविड़ उत्कल बंगा ।

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा ।

तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे ।

गाये तव जय गाथा ।
जन गण मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता ।

जय हे, जय हे, जय हे
जय जय, जय, जय हे ।

☐ रवीन्द्रनाथ टैगोर

राष्ट्र–गीत

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् ।
सुजलाम् सुफलाम मलयज शीतलाम् ।
शस्य श्यामलाम् । मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ॥
सुहासिनीम सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥

त्रिंशकोटि कण्ठ कल कल निनाद कराले
द्विंत्रिंश कोटि भुजैं धृत-खर करवाले ।
के बले मा तुमि अबले बहुबल धारिणीम् ॥
नमामि तारिणीम् रिपुदल वारिणीम् ।
मातरम् । वन्दे मातरम् ॥
श्यामलाम् सरलाम् सुस्तिाम् भूषिताम् ।
धरणीम् भरणीम् मातरम् ।
वन्दे मातरम् ॥

☐ बंकिमचन्द्र चटर्जी

तराना-ए-भारत

(सारे जहां से अच्छा....)

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी, यह गुलसितां हमारा
गुरबत[1] में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
समझो वही हमें भी, दिल हो जहां हमारा
पर्वत वो सबसे ऊँचा हमसाया आसमां का
वो संतरी हमारा, वो पासवां[2] हमारा
गोदी में खेलती हैं इसकी हजारों नदियाँ
गुलशन है जिनके दम से रश्के जिनां[3] हमारा
अय आबे-रुदे-गंगा वो दिन है याद तुझको
उतरा तिरे किनारे जब कारवां हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस मे वैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा
यूनानो-मिस्त्रो-रुमां सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाकी नामो-निशा हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जमा हमारा
'इकबाल' कोई महरम[4] अपना नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहां[5] हमारा

☐ डा० मुहम्मद इकबाल

1. परदेश, 2. पहरेदार, 3. जिस पर स्वर्ग भी ईर्ष्या करे, 4. दोस्त, 5. छिपा हुआ दर्द।

जय राष्ट्रीय निशान

जय राष्ट्रीय निशान ।
लहर-लहर तू मलय गगन में,
फहर-फहर तू नील गगन में,
छहर-छहर जग के आँगन में,
सबसे उच्च महान ।
जय राष्ट्रीय निशान ॥ 1 ॥
जहाँ तक एक रक्त कण तन में,
डिगें न तिल भर अपने प्रण में,
हाहाकार मचायें रण में,
जननी की सन्तान ।
जय राष्ट्रीय निशान ॥ 2 ॥
मस्तक पर शोभित हो रोली
बढ़े शूरवीरों की टोली,
खेलें आज मरण की होली,
बूढ़े और जवान ।
जय राष्ट्रीय निशान ॥ 3 ॥
मन में दीन दुखी की ममता,
हम में हो मरने की क्षमता,
मानव-मानव में हो समता,
धनी गरीब समान ।
गूंजे नभ में तान ।
जय राष्ट्रीय निशान ॥ 4 ॥

☐ सोहनलाल द्विवेदी

मातृ-मन्दिर

(1)

भारतमाता का मन्दिर यह,
समता का सवाद जहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।
जाति धर्म या सम्प्रदाय का,
नहीं भेद-व्यवधान यहाँ,
सबका स्वागत, सबका आदर,
सबका सम सम्मान यहाँ ॥

(2)

राम रहीम बुद्ध ईसा का,
सुलभ एक सा ध्यान यहाँ,
भिन्न-भिन्न भव संस्कृतियों के
गुण गौरव का ज्ञान यहाँ ।
नहीं चाहिए बुद्धि बैर की,
भला प्रेम-उन्माद यहाँ,
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ ॥

(3)

सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम,
आओ, यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम ।

रेखाएँ प्रस्तुत हैं, अपने,
मन के चित्र बना लें हम,
सौ-सौ आदर्शों को लेकर,
एक चरित्र बना लें हम ॥

(4)

कोटि-कोटि कण्ठों से मिलकर,
उठे एक जयनाद यहाँ,
सबका शिव कल्याण यहां है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ ।
मिला सव्य का हमें पुजारी
सकल काम उस न्यायी का,
मुक्ति-लाभ कर्त्तव्य यहाँ है,
एक-एक अनुयायी का ॥

(5)

बैठो माता के आंगन में,
नाता भाई-भाई का,
समझे उसकी प्रसव-वेदना,
वही लाल है माई का ।
एक साथ मिल बैठ बाट लो,
अपना हर्ष-विषाद यहाँ,
सबका शिव-कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ ॥

☐ मैथिलीशरण गुप्त

मातृ-वन्दना

नर-जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर माँ
मेरे श्रम-संचित सब फल।

जीवन के रथ पर चढ़कर
सदा मृत्यु-पथ पर बढ़कर

महाकाल के खरतर शर सह
सकूँ, मुझे तू कर दृढ़तर;

जागे मेरे उर में तेरी
मूर्ति अश्रु-जल धौत विमल

दृग-जल से पा बल, बलि कर दूँ
जननि, जन्म-श्रम-संचित फल।

बाधाएँ आएँ तन पर,
देखूँ तुझे नयन मन भर,

मुझे देख तू सजल दृगों से
अपलक, उर के शतदल पर;

क्लेद-युक्त, अपना तन दूँगा,
मुक्त करूँगा तुझे अटल;

तेरे चरणों पर देकर बलि,
सकल श्रेय-श्रम-संचित फल।

☐ सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

मातृ-भूमि

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुन्दर है,
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है,
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मडल है,
बंदीजन खगवृन्द, शेष-फन सिंहासन है ।

करते अभिषेक पयोद है,
बलिहारी इस वेष की ।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही
सगुण मूर्ति सर्वेश की ।

निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल मन्द सुगन्ध पवन हर लेता श्रम है,
षड्ऋतुओं का विविध दृश्य-युत अद्भुत क्रम है
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है

शुचि सुधा सींचता रात में
तुझ पर चन्द्र प्रकाश है ।
हे मातृभूमि, दिन में तरणि
करता तम का नाश है ।

सुरभित सुन्दर सुखद सुमन तुम पर खिलते हैं ।
भाँति भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते हैं;
औषधियाँ हैं प्राप्त, एक से एक निराली
खानें शोभित कही धातुवर रत्नों वाली ।

जो आवश्यक होते हमें
मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि, वसुधा धरा
तेरा नाम यथार्थ है।

आते ही उपकार याद है माता तेरा,
हो जाता मन मुग्ध भक्ति भावों का प्रेरा,
तू पूजा के योग्य, कीर्ति तेरी हम गावें
मन होता है तुझे उठाकर शीश चढ़ावें।

वह शक्ति कहाँ, हाय क्या करे,
क्यों हमको लज्जा न हो?
हम मातृभूमि केवल तुझे
शीश झुका सकते अहो।

☐ मैथिली शरण गुप्त

पूजा-गीत

वंदना के इन स्वरों में,
एक स्वर मेरा मिला लो।

वंदिनी माँ को न भूलो,
राग में जब मत्त भूलो।
अर्चना के रत्नकण में,
एक कण मेरा मिला लो।

जब हृदय का तार बोले,
शृंखला के बंद खोले।
हों जहां बलि शीश अगणित,
एक सिर मेरा मिला लो।

☐ सोहनलाल द्विवेदी

मातृ-अर्चना

जय जय जय भू भारती ।
तेरी उतारें आरती ।।

हिमगिरि सिरमौर तेरा ।
सागर लहरें चरण पखारती ।।

गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी ।
आब हवा मुक्त उछालें मारती ।।

राम, कृष्ण, गौतम की जननी ।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् उच्चारती ।।

सब शरणागत गोद में ।
अन्तर कोई न जानती ।।

हो अन्नदा, हो धन्न दा ।
हम सबको तू ही पालती ।।

हम रंग गये, हर रंग में ।
हैं तन से, मन से भारती ।।

☐ हरवान हर्ष, जयपुरिया

जय जय हिन्द, हमारे हिन्द !

जय-जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द,
विश्व-सरोवर के सौरभमय प्रिय अरविन्द, हमारे हिन्द ।

तेरे सोतों में अक्षय जल, खेतों में है अक्षय धान,
तन से, मन से, श्रम-विक्रम से, है समर्थ तेरी सन्तान ।

सबके लिए अभय है जग में, जन-जन में तेरा उत्थान,
वैर किसी के लिए नहीं है, प्रीति सभी के लिए समान ।

गंगा-यमुना के प्रवाह हैं अमल अनिन्द्य, हमारे हिन्द,
जय-जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द ।

तेरी चक्र-पताका नभ में ऊंची उड़े सदा स्वाधीन,
परम्परा अपने वीरों की शक्ति हमें दे नित्य नवीन ।

सबका सुहित हमारा हित है, सार्वभौम हम सार्वजनीन,
अपनी इस आसिन्धु धरा में, नहीं रहेंगे होकर हीन ।

ऊंचे और विनम्र सदा के हिम-गिरि, विन्ध्य, हमारे हिन्द,
जय-जय भारतवर्ष हमारे, जय-जय हिन्द, हमारे हिन्द ।

☐ सियारामशरण गुप्त

भारत-महिमा

हिमालय के आंगन में उसे, प्रथम किरणों का ये उपहार।
उषा ने हँस अभिनन्दन किया, और पहनाया हीरक हार ।।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नाश, अखिल संसृति हो उठी अशोक ।।

विमल वाणी ने वीणा ली, कमल कोमल कर में सप्रीत।
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत ।।

बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत।
अरुण-केतन लेकर निज हाथ, वरुण-पथ में हम बढ़े अभीत ।।

सुना है दधीचि का वह त्याग, हमारी जातीयता का विकास।
पुरन्दर ने पवि से है लिखा, अस्थि-युग का मेरा इतिहास ।।

सिन्धु-सा विस्तृत और अथाह, एक निर्वासित का उत्साह ।।
दे रही अभी दिखाई भग्न, मग्न रत्नाकर में वह राह ।।

धर्म का ले लेकर जा नाम, हुआ करती बलि, कर दी बन्द।
हमीं ने दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनन्द ।।

विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर घूम।
भिक्षु होकर रहते सम्राट्, दया दिखलाते घर-घर घूम ।।

यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि।
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि ।।

किसी का हमने छीना नहीं,प्रकृति का रहा पालना यहीं।
हमारी जन्म-भूमि थी यही, कहीं से हम आए थे नहीं ॥

जातियों का उत्थान-पतन, आंधियाँ, झड़ी, प्रचंड समीर।
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर ॥

चरित थे पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा सम्पन्न।
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न ॥

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव।
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव ॥

वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शान्ति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य्य-संतान ॥

जियें तो सदा इसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष।
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष ॥

☐ जयशंकर 'प्रसाद'

प्यारा भारत

प्यारा भारत देश हमारा ।
उत्तर में कश्मीर, कुमारी
कन्या तक फैला दक्षिण में,
पूरब में आसाम, कच्छ तक
इसकी सीमाएँ पश्चिम मे ।
है विशाल भू-भाग एक यह
देश हमारा सुन्दर सारा ।।
प्रातः नित्य रश्मियां रवि की
स्वर्ण-मुकुट इसको पहनातीं,
निशि-दिन सिन्धु लहरियाँ इसके
यश गौरव का गान सुनाती ।
गंगा-यमुना-कावेरी की
बहती इसमें निर्मल धारा ।।
राम - कृष्ण - गौतम - नानक
गांधी ने इसमें जनम लिया है,
ईसा और मुहम्मद को
वाणी ने इसे पवित्र किया है ।
इसमें मन्दिर भी, मस्जिद भी,
गिरजाघर भी और गुरुद्वारा ।।
वेद - पुराण - कुरान - बाईबल—
गीता और ग्रन्थ साहब के
अमृतमय संदेशों से है
सिंचित कण-कण, तृण-तृण इसके ।
सत्य - अहिंसा - प्रेम - शांति का
है इसका अपना पथ न्यारा ।।

☐ प्रज्ञात

भारत प्यारा देश हमारा.......

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है
हर रुत, हर मौसम इसका कैसा प्यारा-प्यारा है
कैसा सुहाना, कैसा सुन्दर प्यारा देश हमारा है
दु ख में, सुख में हर हालत में भारत दिल का सहारा है

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से प्यारा है।

सारे जग के पहाड़ो मे बे-मिसाल पहाड़ हिमाला है
पर्वत सबसे ऊँचा है यह पर्वत सबसे निराला है
भारत की रक्षा करता है भारत का रखवाला है
लाखों चश्मे[1] बहते है, यह लाखों नदियों वाला है

भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से प्यारा है।

गंगाजी की प्यारी लहरें गीत सुनाती जाती है
सदियों की तहजीब[2] हमारी याद दिलाती जाती है
भारत के गुलज़ारों[3] को सरसब्ज[4] बनाती जाती है
खेतों को हरियाली देती, फूल खिलाती जाती है

भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से प्यारा है।

कृष्ण की बंसी ने फूकी है रुह हमारी जानों में
गौतम की आवाज बसी है महलों में मैदानों में
चिश्ती ने जो मय[5] दी थी, वह अब तक है पैमानो[6] में
नानक की तालीम अभी तक गूंज रही है कानों में

भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से प्यारा है।

मज़हब[7] कुछ हो हिन्दी हैं हम, सारे भाई-भाई हैं
हिन्दू हैं या मुस्लिम या सिख हैं या ईसाई हैं
प्रेम ने सबको एक किया है, प्रेम के हम शैदाई हैं
भारत नाम के आशिक हैं हम, भारत के सौदाई हैं

भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से प्यारा है।

☐ अफसर मेरठ

2–सभ्यता, 3–उपवन, 4–हरा-भरा, 5–शराब, 6–प्याला,

वृथा मत लो भारत का नाम

वृथा मत लो भारत का नाम ।

मानचित्र में जो मिलता है, नही देश भारत है,
भू पर नहीं, मनों में ही, बस कहीं शेष भारत है ।
भारत एक स्वप्न, भू को ऊपर ले जाने वाला,
भारत एक विचार, स्वर्ग को भू पर लाने वाला ।

भारत एक भाव, जिसको पाकर मनुष्य जगता है,
भारत एक जलज, जिस पर जल का न दाग लगता है ।
भारत है संज्ञा विराम की, उज्जवल आत्म उदय की,
भारत है आभा मनुष्य की, सबसे बड़ी विजय की ।

भारत है भावना दाह जग जीवन का हरने की,
भारत है कल्पना मनुज को राग-मुक्त करने की ।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश-देश में खड़ा वहाँ भारत जीवित, भास्वर है ।

भारत जहाँ वहाँ जीवन साधना नही है भ्रम मे,
धाराओं का समाधान है मिला हुआ संगम में ।
जहाँ त्याग माधुर्यपूर्ण हो, जहाँ भोग निष्काम,
समरस हो कामना, वहीं भारत को करो प्रणाम ।

वृथा मत लो भारत का नाम ।

☐ रामधारीसिंह दिनकर

हमारी सभ्यता

शैशव-दशा में देश प्राय: जिस समय सब व्याप्त थे,
निःशेष विषयों में तभी हम प्रौढ़ता को प्राप्त थे।
संसार को पहले हमीं ने ज्ञान-शिक्षा दान की,
आचार की, व्यापार की, व्यवहार की, विज्ञान की ।। 1 ।।

"हां और ना" भी अन्यजन करना न जब थे जानते,
थे ईश के आदेश तब हम वेद मंत्र बखानते।
जब थे दिगम्बर रूप में वे जंगलों में घूमते,
प्रासाद-केतन-पट हमारे चन्द्र को थे चूमते ।। 2 ।।

हम को विदित थे तत्व सारे नाश और विकास के,
कोई रहस्य छिपे न थे पृथ्वी तथा आकाश के।
थे जो हजारों वर्ष पहले जिस तरह हमनें कहे,
विज्ञान-वेत्ता अब वही सिद्धान्त निश्चित कर रहे ।। 3 ।।

था कौन ईश्वर के सिवा जिसको हमारा सिर झुके ?
हां, कौन ऐसा स्थान था जिसमें हमारी गति रुके ?
सारी धरा तो थी धरा ही, सिंधु भी बंधवा दिया,
आकाश में भी आत्म-बल से सहज ही विचरण किया ।।4।।

यह ठीक है, पश्चिम बहुत ही कर रहा उत्कर्ष है,
पर पूर्व-गुरु उसका यही पुरु वृद्ध भारतवर्ष है।
जाकर विवेकानन्द-सम कुछ साधु जन इस देश से–
करते उसे कृत-कृत्य हैं अब भी अतुल उपदेश से ।। 5 ।।

☐ मैथिलीशरण गुप्त

हमको प्यारा, हिन्द हमारा.......

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते हैं ।
अपने देश की हो कंचन सुन्दर
यही राग अलपाते हैं ।

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते हैं ।
अपने देश की अद्वितीय संस्कृति
मंत्र इसी के अपनाते है ।

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते है ।
आँधी आई तूफा आये ।
हम मौलिकता पाते हैं ।

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते हैं ।
अपनायें है गैरों को भी
हम विशाल हृदय दिखलाते है ।

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते हैं ।
महापुरुषों की जननी भारत
उनको आदर्श बनाते हैं ।

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते हैं ।
रूप रंग सौ सौ की टोली
विपत्त पडे, मिलकर एक हो जाते है ।

हमको प्यारा, हिन्द हमारा, हम वन्देमातरम् गाते हैं ।

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

मेरे देश की धरती

मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरा मोती मेरे·······
बैलों के गले में जब घुघरू, जीवन का राग सुनाते हैं।
गम कोसों दूर हो जाता है, खुशियों के चमन मुस्काते है।

ओ ओ सुनके रहट की आवाजें, यूं लगे कहीं शहनाई बजे
आते ही मस्त बहारों के, दुल्हन की तरह हर खेत सजे मेरे····

जब चलते है इस धरती पे हल, ममता अंगड़ाइयाँ लेती है।
क्यों ना पूजे इस माटी को, जो जीवन का सुख देती है।

ओ ओ इस धरती पे जन्म लिया २
उसने ही पाया प्यार तेरा

यहाँ अपना पराया कोई नही, है सबपे माँ उपकार तेरा
यह बाग है गौतम नानक का, खिलते है अमन के फूल यहाँ

गाधी, सुभाष, टैगोर, तिलक ऐसे है चमन के फूल यहाँ
रंग हरा हरीसिह नलवे से, रंग लाल है लाल बहादुर से

रग बना बसन्ती भगतसिह, रंग अमन का वीर जवाहर से
मेरे देश की धरती सोना उगले·······

☐ फिल्म उपकार से

हिन्दोस्तां

नाकूस[1] से गरज है न मतलब अज़ां[2] से है
मुझको अगर है इश्क तो हिन्दुस्तां से है
तहज़ीबे-हिन्द[3] का नहीं चश्मा[4] अगर अज़ल[5]
यह मौजे-रंग-रंग फिर आयी कहां से है
जर्रे में गर तड़प है तो इस अर्ज़-पाक[6] से
सूरज में रोशनी है तो इस आसमां से है।

☐ ज़फ़र अली

1–शंख, 2–बांग, 3–भारतीय संस्कृति, 4–स्रोत, 5–अनादि का
6–पवित्र धरती।

यह हिन्दोस्तां

यह हिन्दोस्तां रश्के-खुल्दे-बरी[1]
उगलती है सोना वतन की ज़मी
कही कोयले और लोहे की कां
कही सुर्ख पत्थर की ऊँची चटां[2]

कहीं संगमरमर की शफ्फ़ाक सिल
फिसलता है जिसकी सफाई पे दिल
बहुत–सें ख़ज़ीने हैं इस ख़ाक में
हज़ारों दफ़ीनें[3] हैं इस ख़ाक में

गुलो–लाल—ओ यासमान[4] के आयाग[5]
महकते हुए आम के सब्ज बाग
हरे और भरे जगलों की बहार
झलाझल चमकते हुए रेगजार[6]

यह सूरज की रंगीन किरनों का जाल
कि जिस तरह फितरफ[7] ने खोले हों बाल
उफुक से उबलता हुआ रंगो-नूर
फजाओं[9] में परवाज[10] करते म्यूर[11]

कुहिस्तान[12] के ये सुनहरे उकाब[13]
हवाओं में उड़ते हुए आफताब[14]
कवल झील में मुस्कराते हुए
चिरागा[15] का मंजर[16] दिखाते हुए

ये फूलों से गुल-पैरहन[17] शाखसार[18]
गिजालो[19] से मायूस[20] ये मर्गज़ार[21]

तड़पती मचलती हुई बिजलियाँ
समंदर में मिलती हुई नदियाँ
ये नीलम और अलमास[22] के कोहसार[23]
ये चाँदी के पिघले हुए आबशार[24]
ये मखमल में लिपटी हुई वादियां
हिमाला की गुलपोश[25] शहजादियां[26]
यह गंगा का आंचल, यह जमुना की रेत
ये धान और गेहूँ के शादाब[27] खेत
मगर ये खजाने हमारे नहीं
हमारे नहीं हैं तुम्हारे नहीं।

☐ अली सरदार जाफ़री

1-जिस पर स्वर्ग भी ईर्ष्या करे, 2-चट्टान 3-गडा हुआ धन 4. गुलाब, लाल और चमेली, 5-प्याला, 6-रेतीले मैदान, 7-प्रकृति, 8-क्षितिज 9-शून्य, 10-उड़ते हुए, 11-पक्षी, 12. पहाडी इलाका, 13-गिद्ध 14-सूर्य, 15-दीपावली, 16-दृश्य, 17-फूलों के वस्त्र, 18-कुंज, झुरमुट, 19-हिरन, 20-परिपूर्ण, 21-हरे भरे जगल, 22-हीरक, 23-पहाड, 24-जल प्रपात, 25-फूलों से ढकी, 26-राजकुमारियाँ, 27-हरे भरे।

अय वतन

सलाम हो तिरी गलियों पे अय वतन कि जहाँ
यह रस्म आम है, जो चाहे सर उसके चले

कोई भी शर्त बजुज[1] वज-ए-एहतियात[2] नहीं
कोई सम्भल के चले, कोई लड़खड़ा के चले

सलाम हो तिरी गलियों पे अय वतन कि जहाँ
मिरे जुनून की पादाश[3] संग-ओ-खिश्त[4] नहीं

जहाँ पे दान-ए-गदुम नहीं है वजहे-इताब[5]
जहे-नसीब[6] मुयस्सर[7] है वो बहिश्ते-बरी[8]

सलाम हो तिरी गलियों पे जो कुशादा[9] रहे
हमेशा मेरे लिए कल्बे-दोस्ता[10] की तरह

मैं एक सरकश[11] ओ-आवारा की तरह
हमेशा बख्श दिया है शफीक माँ की तरह

सलाम तेरी हवा को, तिरीफिजा को सलाम
है जिनकी देन मिश जौके-शेर-ओ-नग्मागरी[13]

खुलूसे-दिल[14] से दुआ है, रहे कयामत[15] तक
मुसर्रतों के सितारों से तेरी माँग भरी

☐ गोपाल मित्तल

1–सिवाय, 2–सावधानी की रीत, 3–सजा, 4–ईंट और पत्थर, 5–क्रोध का कारण, 6–सौभाग्य, 7. प्राप्त, 8–स्वर्ग, 9. चौड़ी, 10–मित्रों का दिल, 11–बागी, 12–दयालु, 13–शेर और गीत लिखने की अभिरुचि 14–हार्दिक निष्ठा, 15–प्रलय।

हमारा देश

(तमिल कविता 'एंगल नाड' का हिन्दी रूपान्तर—
भारती भक्त)

(1)

चमक रहा उत्तुंग हिमालय, यह नगराज हमारा ही है।
जोड़ नहीं धरती पर जिसका, वह नगराज हमारा ही है।

नदी प्यारी ही है गंगा, प्लावित करती मधुरस-धारा।
वहती है क्या कहीं और भी ऐसी पावन कल-कल धारा?

सम्मानित जो सकल विश्व में, महिमा जिनकी बहुत रही है,
अमर ग्रंथ वे सभी हमारे-उपनिषदों का देश यही है।

गायेंगे यश हम सब इसका, यह है स्वर्णिम देश हमारा।
आगे कौन जगत में हमसे, यह है भारत देश हमारा।

(2)

यह है देश हमारा भारत, महारथीगण हुए जहाँ पर,
यह है देश मही का स्वर्णिम-ऋषियों ने तप किये जहाँ पर,

यह है देश, जहाँ नारद के गूँजे मधुमय गान कभी थे,
यह है देश, जहाँ पर बनते सर्वोत्तम सामान सभी थे।

यह है देश हमारा भारत, पूर्ण ज्ञान का शुभ्र निकेतन।
यह है देश, जहां पर बरसी बुद्धदेव की करुणा चेतन।

है महान, अति भव्य पुरातन, गूँजेगा यह गान हमारा।
है क्या हम-सा कोई जग में, यह है भारत देश हमारा।

(3)

विघ्नों का दल चढ़ आये तो उसे देख भयभीत न होंगे ।
अब न रहेंगे दलित दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे,

क्षुद्र स्वार्थ की खातिर हम तो कभी न गर्हित कर्म करेंगे,
पुण्यभूमि यह भारतमाता, जग की हम तो भीख न लेंगे ।

मिसरी, मधु, मेवा, फल सारे देती हमको सदा यही है,
कदली, चावल, अन्न विविध और क्षीर सुधामय लुटा रही है ।

आर्यभूमि उत्कर्षमयी यह, गूँजेगा यह गान हमारा ।
कौन करेगा समता इसकी, महिमामय यह देश हमारा ।

☐ सुब्रह्मण्य भारती

हमारा देश

अरुण यह मधुमय देश हमारा !

जहां पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा,
सरस तामरस-गर्भ विभा पर-नाच रही तरुशिखा मनोहर

छिटका जीवन-हरियाली पर मंगल–कुंकुम सारा
लघु सुरधनु से पख पसारे—शीतल मलय-समीर सहारे

उड़ते खग जिस ओर मुँह किये समझ नीड़ निज प्यारा
बरसाता आँखों के बादल-बनते. जहाँ भरे करुणा जल

लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा
हेम-कुंभ ले उपा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे

मदिर ऊँघते रहते जब जग कर रजनी भर तारा
अरुण यह मधुमय देश हमारा ।

☐ जयशंकर प्रसाद

हिन्दुस्तान हमारा है

कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वर धारा है—
भारत वर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

जिस दिन सबसे पहले जागे, नवल सृजन के स्वप्न घने,
जिस दिन देश काल के दो-दो विस्तृत विमल वितान तने,
जिस क्षण नभ में तारे छिटके, जिस दिन सूरज-चाद बने,
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

जबकि घटाओं ने सीखा था सबसे पहले घहराना,
पहले पहल प्रभंजन ने जब सीखा था कुछ लहराना,
जबकि जलधि सब सीख रहे थे सबसे पहले लहराना,
उसी अनादि-आदि क्षण से यह जन्म-स्थान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

जिस क्षण से जड़ रजकण गतिमय होकर जंगम कहलाए,
जब विहँसी प्रथम उषा वह, जबकि कमल-दल मुसकाए,
जब मिट्टी में चेतन चमका, प्राणों के झोंके आए,
है तब से यह देश हमारा, यह मन प्राण हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यहाँ प्रथम मानव ने खोले निंदियारे लोचन अपने।
इसी नभ तले उसने देखे शत-शत नवल सृजन-सपने,
यहाँ उठे 'स्वाहा!' के स्वर, औ यहाँ 'स्वधा' के मन्त्र बने
ऐसा प्यारा देश पुरातन ज्ञान-विधान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

सतलज, व्यास, चिनाव, वितस्ता रावी, सिंधु, तरंगवती,
यह गंगा माता, यह यमुना गहर, लहर-रस-रंगवती,
ब्रह्मपुत्र, कृष्णा कावेरी, वत्सलता-उत्संग-मती,
इनसे प्लावित देश हमारा, यह रसखान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा, है।
विध्य, सतपुड़ा, नागा, खसिया, ये दो औघट घाट महा,
भारत के पूरब-पश्चिम के ये दो भीम कपाट महा,
तुंग शिखर, चिर अटल हिमालय, है पर्वत-सम्राट यहाँ
यह गिरिवर बन गया युगों से, विजय-निशान हमारा है
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।
क्या गणना है कितनी लंबी हम सबकी इतिहास लड़ी ?
हमें गर्व है कि बहुत ही गहरे अपनी नीव लड़ी ?
हमने बहुत बार सीखी है कई क्रांतियाँ बड़ी-बड़ी
इतिहासों ने किया सदा ही अतिशय मान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।
है आसन्नभूत अति उज्जवल, है अतीत गौरवशाली,
औ छिटकी है वर्तमान पर बलि के शोणित की लाली,
नव उषा-सी विजय हमारी विहँस रही है मतवाली,
हम मानव को मुक्त करेंगे, यही विधान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।
गरज उठे चालीस कोटि जन सुन ये वचन उछाह भरे,
काँप उठे प्रतिपक्षी जनगण, उनके अंतस्थल सिहरे,
आज नए युग के नयनों से ज्वलित अग्नि के पुंज झरे
कौन सामने आएगा ? यह देश महान हमारा है।
भारतवर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्तान हमारा है।

□ बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

देश हमारा

देश हमारा फूलों सा है, हम तितली से वासी,
धरती राधा जैसी प्यारी, वादल श्याम सलोने
होठों पर हैं मीरा के पद, व्यथा हृदय के कोने
रंग रुपहला और सुनहला अजर, अमर, अविनाशी
देश हमारा फूलों सा है, हम तितली से वासी

हम मूल्यों के लिए समर्पित दीप सदृश जलते है
छिड़ने पर संघर्ष भट्टियों में गलते-ढलते हैं
हम ममता के मूर्त्त रूप हैं, समता के अभ्यासी
देश हमारा फूलों सा है, हम तितली से वासी

धुआँ-धूल के बीच सौख्य का इन्द्र धनुष गढ़ते है
विभा-लोक की ओर सदा संकल्पनिष्ठ बढ़ते है
पुण्य भूमि यह, इसका कण-कण मथुरा, काबा, काशी
देश हमारा फूलों सा है, हम तितली से वासी।

❑ श्याम सुन्दर घोष

भारत देश

जय-जय प्यारा भारत देश

जय-जय प्यारा, जग मे न्यारा, शोभित सारा देश हमारा।
जगत-मुकुट जगदीश-दुलारा, जग-सौभाग्य सुदेश ॥ 1 ॥
जय-जय प्यारा भारत देश।

स्वर्गिक शीश-फूल पृथिवी का, प्रेम-मूल, प्रियलोक त्रयी का।
सुललित प्रकृति-नटी का टीका, ज्यों निशि का राकेश ॥ 2 ॥
जय-जय प्यारा भारत देश।

जय-जय शुभ्र हिमाचल शृंगा, कलरव-निरत कलोलिनी-गंगा
भानु प्रताप चमत्कृत अंगा, तेज पुंज तप वेश ॥ 3 ॥
जय-जय प्यारा भारत देश।

जग मे कोटि-कोटि जुग जीवें, जीवन सुलभ रस पीवें।
सुखद वितान सुकृत का सीवें, रहे स्वतन्त्र हमेश ॥ 4 ॥
जय-जय प्यारा भारत देश।

☐ श्रीधर पाठक

खण्ड 'व'

भारत–विविध

राष्ट्र प्रतीक चिन्ह

फक्र कर हे ! हमवतन
गर्व से तू सीना तान ।
नामों निशां निरालापन
कहाँ मुल्क भारत समान ?

मुक्त है हम, मुक्त जननी
जन गण मन मधुर राष्ट्र गान ।
सार्वभौम सत्ता हमारी
समता, स्वतंत्रता, न्याय का अनूठा संविधान ।

है तिरंगा हिन्द पताका
हर रंग की अपनी पहचान ।
चहुँ दिशा में सिंह ध्वनि
अशोक स्तंभ मे राष्ट्र निशान ।

धर्मचक्र, सत्यमेव जयते
गीता, रामायण, वेद पुराण ।
चैत्र मास की छटा अनोखी
नाचे मयूर कोकिला तान ।

शेरों की संतान बढ़ेगी
चीता राष्ट्र पशु समान ।
सुरभि, सुशोभित, कमल पावनता
हर वीणा पर राष्ट्र गुण-गान ।

☐ हरवान हर्ष जयपुरिया

पन्द्रह अगस्त

नमस्कार उन नये पुराने
सभी क्षणों को
इस दिन के जो
स्वतन्त्रता का ताना-बाना
इन्ही क्षणों के
धागों से ही बुना गया था।

नमस्कार उन नीव-प्रस्तरों को
अदृष्य जो
स्वतन्त्रता का महल अनोखा
भव्य उन्हीं पर
चिना गया था।
नमस्कार उन नव कलियों को
विना खिले ही
मुरझाकर जो
स्वतन्त्रता की बलि-वेदी पर
बिखर गयी थीं।
आज उन्ही की सुरभि-सुगन्धित
स्वतन्त्रता उद्यान हमारा
गहगह् गहगह महक रहा है।

डा० कन्हैयालाल 'सहल'

यह महापर्व

यह महापर्व यह महाराग।
जिसके स्वर्णिम...स्वर संगम में
जन जन का जीवन गया जाग।
जीवन पथ की सब बाधाएँ
दृढ़ पग को पाकर हुईं फूल।
मस्तक पर पाते चरण चिन्ह
आपत्ति शिलाएँ बनीं धूल।
थे वे बापू के चरण कि जिनमें
युग युग की गति हुई लीन।
जिनकी बढ़ती प्रतिध्वनि से ही
कण कण में था जीवन नवीन।
उस पद की रक्तिम रख बन गई
नव स्वतन्त्रता का सुहाग,
यह महापर्व यह महाराग।
यह सत्य अहिंसा का विराट
वैभव जग विस्मित रहा देख।
जिसमे न प्रेम के बीच विश्व में,
रहे युद्ध की एक रेख।
जन जन का हो अधिकार,
न हो हिंसा, प्रतिहिंसा की पुकार।
मानव समाज से मिले कि जैसे,
फूल फूल से सजे हार।

हो राजनीति ही प्रेम नीति,
व्यवहार धर्म शतदल पराग,
यह महापर्व यह महाराग।
जीवन ही सुख का एक राग,
छब्बीस जनवरी बने टेक।
हम एक किन्तु बाहर अनेक,
भीतर अनेक पर बने अनेक।
अब कालेपन की रात नहीं,
अब ज्योतित है जीवन दिनेश।
जन गन मन अधिनायक अभिनव
शोभित है भारत दिव्य देश।
श्रद्धांजलि अर्पित करे इसे,
भूमंडल का प्रत्येक भाग।
यह महापर्व यह महाराग।

☐ डा० रामकुमार वर्मा

होली की बहारें
(अंशतः)

जब फागुन रंग झमकते हों, तब देख बहारें होली की
और ढफ के शोर खड़कते हों, तब देख बहारें होली की
परियों के रंग दमकते हों, तब देख बहारें होली की
खुम[1] शीशे, जाम झलकते हों, तब देख बहारें होली की
महबूब नशे में छकते हों, तब देख बहारें होली की

हो नाच रंगीली परियों का, बैठे हों गुलरु[2] रंग भरे
कुछ भीगी तानें होली की, कुछ नाज़-ओ-अदा के ढंग भरे
दिल भूले देख बहारों को और कानों मे आहंग[3] भरे
कुछ तबले खड़कें रंग भरे, कुछ ऐस के दम मुंह चंग भरे
कुछ घुंघरु ताल छनकते हों, तब देख बहारें होली की

गुलजार खिले हो परियों के, और मजलिस[4] की तैयारी हो
कपड़ों पर रंग के छीटों से खुशरंग अजब गुलकारी[5] हो
मुंह लाल, गुलाबी आँखें हों और हाथों में पिचकारी हो
उस रंग भरी पिचकारी को अंगिया पर तक मारी हो
सीनो से रंग ढलकते हों, तब देख बहारें होली की

यह धूम मची हो होली की और ऐश मजे का झक्कड़[6] हो
उस खींचा खींच घसीटी उपर भड़वे खन्दी का फक्कड़ हो
माजून[7], शराबें, नाच, मजा और टिकिया सुलफा[8] कक्कड़ हो
लड़भिड़ के 'नज़ीर' भी निकला हो, कीचड़ में लत्थड़ पत्थड़ हो
जब ऐसे ऐश महकते हों, तब देख बहारें होली की।

☐ 'नज़ीर' 'अकबराबादी'

1–मद्य, 2–फूल जैसे मुंह वाला, 3–आवाज, 4–महफिल, 5–बेलबूटे
6–तेज हवाएं, 7–पाक, ताकत की दवा, 8–नाश्ता।

दीवाली का सामान

हर इक मकां में जला फिर दिया दिवाली का
हर इक तरफ को उजाला हुआ दिवाली का
सभी के दिल में समां भा गया दिवाली का
किसी के दिल को मजा खुश लगा दिवाली का
अजब बहार का है दिन बना दिवाली का।

जहां में यारो अजब तरह का है यह त्योहार
किसी ने नकद लिया और कोई करे उधार
खिलौने खीलों बतासों का गर्म है बाजार
हरइक दुकां में चिरागों की हो रही है बहार
सभों को फिक्र है अब जा बना दिवाली का

मिठाइयों की दुकानें लगा के हलवाई
पुकारते हैं कि लाला दिवाली है आई
बतासे ले कोई बर्फी किसी ने तुलवाई
खिलौने वालों की उनसे ज़ियादा बन आई
गोया उन्हों के वां[1] राज आ गया दिवाली का।

सराफ़ हराम की कौड़ी का जिनका है ब्योपार
उन्होंने खाया है इस दिन के वास्ते ही उधार
कहे है हँसके कर्जख्वाह[2] से हरइक इक बार
दिवाली आई है सब दे चुकायेंगे अय यार
खुदा के फ़ज्ल[3] से है आसरा दिवाली का

मकान लीप के ठिलिया जो कोरी रखवाई
जला चिराग़ को कौड़ी वो जल्द झनकाई
असल जुआरी थे उनमें तो जान सी आई
खुशी से कूद उछलकर पुकारे ओ भाई
शगून पहले करो तुम जरा दिवाली का।

किसी ने घर की हवेली गिरौं रखा हारी
जो कुछ थी जिन्स मुयस्सर[4] जरा जरा हारी
किसी ने चीज किसी की चुरा छुपा हारी
किसी ने गठरी पड़ोसन की अपनी ला हारी
यह हार जीत का चर्चा पड़ा दिवाली का।

ये बातें सच हैं न ---- --को जानियो यारो
नसीहतों[5] है इन्हें में ठानियो यारो
जहाँ को जाओ यह किस्सा वखानियो यारो
जो जुआरी हो न बुरा, उसका मानियो यारो
'नजीर' आप भी है ज्वारिया दिवाली का

□ नज़ीर अकबराबादी

1–उन्हीं के यहाँ, 2–उधार मांगने वाला, 3–दया. 4–प्राप्त, 5–उपदेश।

बापू

चले गये तुम, पर निज स्मृति को
बना गये आधार।
बापू, तुम हो गये देश के
कण कण मे साकार।
जो कुछ तुमने दिया विश्व को,
उसने उन्नत किया विश्व को,
कभी तुम्हे क्या भूल सकेगा
आभारी संसार ?
बापू, यह जग व्यर्थ त्रस्त है,
किया मार्ग तुमने प्रशस्त है,
सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया का
खोल गये तुम द्वार।
तुम्हें भूल कर भी क्या भारत,
रख सकता निज शीश समुन्नत ?
वहन कदापि न वह कर सकता
कृतघ्नता का भार।
हम थे तुम्हें प्राण-सम प्यारे,
किन्तु तुम्हें थे प्रिय जन सारे,
था सारा संसार तुम्हारा
एक विपुल परिवार।
तुमको पाकर रहे सुखी हम,
हुए तुम्हारे बिना दुखी हम,
क्या न पाप जग का धो देगी
यह लोचन-जल-धार ?

☐ ठाकुर गोपाल शरण सिंह

बुद्धदेव के प्रति

आओ फिर मे करुणावतार !
वट-तट पर हृदय अधीर लिये
है खडी सुजाता खीर लिये;
खोले कुटिया के बन्द द्वार।
आओ फिर मे करुणावतार !
फिर बैठे है चिंतित अशोक,
शिर छत्र, किंतु है हृदय-शोक।
रण की जयश्री बन रही हार !
आओ फिर से करुणावतार !
मानव ने दानव धरा रूप,
भर रहे रक्त से समर-कूप,
डूबती धरा को लो उबार।
आओ फिर से करुणावतार।

☐ सोहनलाल द्विवेदी

शान्ति

लावा जो जन जन के मानस से फूट रहा,
झरना जो अभावों की धरती से छूट रहा,

अक्षर वे गूंज रहे धरती आकाश मे,
काव्य वही सच्चा है पढ तू अवकाश में;

वे ही स्वर पर्वत को समतल कर देते हैं,
वे ही स्वर नदियों में मोती भर देते है,

स्वर जो पसीनो की साँसों से आते है,
अक्षर वे मुर्दों में जीवन सुलगाते है।

☐ उदयशंकर भट्ट

कोई नहीं पराया

कोई नही पराया, मेरा घर सारा संसार है।

मैं न बँधा हूँ देश-काल की जंग लगी जंजीर में,
मैं न खड़ा हूँ जाति-पाँति की ऊँची-नीची भीड़ में,
मेरा धर्म न कुछ स्याही-शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम है,
मुझसे तुम न कहो मंदिर-मस्जिद पर मैं सर टेक दूँ,

मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इन्सान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत-बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग-सुख की सुमाकुर कहानियाँ,

मेरी धरती सौ-सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा ससार है।।

मुझे मिली है प्यास विषमता का विष पीने के लिए,
मैं जन्मा हूँ नहीं स्वयं-हित, जग-हित जीने के लिए,
मुझे दी गई आग कि इस तम में मैं आग लगा सकूँ,
गीत मिले इसलिए कि घायल जग की पीड़ा गा सकूँ,
मेरे दर्दीले गीतों को मत पहनाओ हथकड़ी,

मेरा दद नही मेरा है, सबका हाहाकार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

मैं सिखलाता हूँ कि जिश्रो श्री' जीने दो ससार को,
जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो श्रपने प्यार को,
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह कुचल न जाये पग से कोई शूल भी,
सुख, न तुम्हारा सुख केवल जग का भी उसमें भाग है।

फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का शृंगार है।
कोई नही पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

☐ नीरज

कठपुतले

ये जीवित हैं या जीवन्मृत,
या किसी काल-विष से मूर्च्छित ?
ये मनुजाकृति ग्रामिक अगणित,
स्थावर, विषण्ण, जड़वत्, स्तम्भित।

किस महारात्रि तम में निद्रित,
ये प्रेत ? स्वप्नवत् संचालित।
किस मोह मंत्र से रे कीलित,
ये दैव-दग्ध, जग के पीड़ित।

बामन, ठाकुर, लाला, कुम्हार,
कुर्मी, अहीर, बारी, कहार।
नाई, कोरी, पासी, चमार,
शोषित किसान या जमींदार—

ये हैं खाते-पीते, रहते,
चलते फिरते, रोते हँसते।
लड़ते मिलते, सोते जगते,
आनन्द, नृत्य, उत्सव करते—

पर जैसे कठपुतले निर्मित,
छद्म प्रतिमाएँ भूषित सज्जित।
युग युग की प्रेतात्मा अविदित,
इनकी गतिविधि करती यंत्रित।

ये छायातन, ये मायातन,
विश्वास मूढ़ नर-नारी गण।
चिर रूढ़ि रीतियों के गोपन,
सूत्रों में बँध करते नर्तन।

या गत संस्कारों इंगित,
ये क्रमाचार करते निश्चित।
कल्पित स्वर में मुखरित, स्पंदित,
क्षण भर को ज्यों लगते जीवित।

ये मनुज नही हैं रे जाग्रत,
जिनका उर भावों से रोलित।
जिनमें महत्वाकांक्षाएँ नित,
होती समुद्र सी आलोडित।

जो बुद्धि प्राण, करते चिन्तन,
तत्वान्वेषण. सत्यालोचन,
जो जीवन शिल्पी चिर शोभन,
संचारित करते भव-जीवन।

ये दास मूर्तियाँ है चित्रित,
जो घोर अविद्या में मोहित।
ये मानव नही, जीव शापित
चेतना विहीन, आत्म-विस्मृत !

☐ सुमित्रानन्दन पन्त

पातल और पीथल

अरे घास री रोटी हीं,
जद वन बिलावड़ो ले भाग्यो ।
नान्हों सो अमर्यो चीख पड़्यो,
राणा रो सोयो दुख जाग्यो ॥1॥

हूँ लड़्यो घणो, हूँ सह्यो घणो,
मेवाड़ी मान बचावण नैं ।
मैं पाछ नहीं राखी रण में,
बैर्यां रो खून बहावण नै ॥2॥

जद याद करूँ हलदीघाटी,
नैणां मे रगत उतर आवै ।
सुख-दुख रो साथी चेतकड़ो,
सूती सी हूक जगा जावै ॥3॥

पण आज बिलखतो देखूँ हूँ,
जद राजकंवर नैं, रोटी नैं ।
तो क्षात्र-धर्म नें, भूलूँ हूँ,
भूलूँ हिन्दवाणी चोटी नैं ॥4॥

आ सोच हुई दो टूक तड़क,
राणा री भीम बजर छाती ।
आंख्यां में आंसू भर बोल्यो,
हूँ लिखस्यूँ अकबर नैं पाती ॥5॥

राणा री कागद वांच हुयो,
ग्रकबर रो सपनो-सो सांचो।
पण नैण कर्‌या बिसवास नहीं,
जद् वांच वांच नैं फिर वांच्यो ॥6॥

वस दूत इसारां पा भाज्यां,
पीथल नैं तुरत बुलावण नैं।
किरणां रो पीथल ग्रा पूग्यो,
ग्रकवर रो भरम मिटावण नैं ॥7॥

"म्हे बाघ लियो है पीथल! सुण,
पिंजड़ा में जंगली सेर पकड़।
यो देख हाथ रो कागद है,
तू देखां फिरसी कयां ग्रकड़ ॥8॥

हूँ ग्राज पातस्या धरती रो
मेवाड़ी पाग पगां मैं है।
ग्रब बता मनैं किण रजवट नैं,
रजपूती खून रगां मैं है ॥9॥

जद पीथल कागद ले, देखी,
राणा री सागी सैनाणी।
नीचैं सूं धरती खसक गयो
ग्राँख्यां मैं भर ग्रायो पाणी ॥10॥

पण फेर कही तत्काल संभल,
"ग्रा वात सफा ही झूठी है।
राणा री पाग सदा ऊँची,
राणा री ग्राण ग्रटूटी है ॥11॥

ज्यो हुकुम होय तो लिख पूछूँ,
राणा नैं कागद रैं खातर।"
"लै पूछ भलां ही पीथल! तू,
ग्रा बात सही" बोल्यो ग्रकबर ॥12॥

"म्हें आज सुणी है, नाहरियो,
स्याला रै सागै सोवैलो।
म्हें आज सुनी है, सूरजड़ो,
बादल री ओटां खोवैलो ॥13॥

पीथल रा आखर पढ़ता हीं,
राणा री आँख्यां लाल हुई।
"धिक्कार मनै, हूँ कायर हूँ"
नाहर री एक दकाल हुई ॥14॥

"हूँ भूख मरूँ, हूँ प्यास मरूँ,
मेवाड़ धरा आजाद रहै।
हूँ घोर उजाड़ां मे भटकूँ।
पण मन मैं माँ री याद रह्वै ॥15॥

पीथल के खिमता बादल री,
जो रोकै सूर उगाली नैं।
सिंहा री हायल सह लेवै,
वा कूख मिली कद स्याली नैं ॥16॥

जद राणा री सन्देश गयो,
पीथल री छाती दूणी ही।
हिन्दवाणी सूरज चमके हो,
अकबर री दुनिया सूनी ही ॥17॥

□ कन्हैयालाल सेठिया

परिन्दे की फरियाद

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना।
वे बाग की बहारें, वह मेरा आशियाना।।

आज़ादियाँ कहाँ वे अब अपने घोंसले की।
अपनी खुशी से आना अपनी खुशी से जाना।।

लगती है चोट दिल पर आता है याद जिस दम।
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुस्कराना।।

वह प्यारी प्यारी सूरत वह कामनी सी मूरत।
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना।।

आती नहीं सदायें उसकी मेरे कफ़स में।
होती मेरी रिहाई ए काश! मेरे बस में।।

☐ डा० मुहम्मद इकबाल

शहीद

वतन के नौजवान वतन की राह में शहीद हों
पुकारती है ये जमीं आसमां शहीद हो

शहीद तेरी मौत ही तेरे वतन की जिदगी
तेरे लहू से जाग उठेगी इस चमन की जिदगी

खिलेंगे फूल उस जगह पे तू जहां शहीद हो—वतन
गुलाम उस वतन के दुश्मनों इन्तजाम ले

इन दोनों अपने बाजुओं से खनजरों का काम ले
चमन के वास्ते शहीद हो—वतन

पहाड़ तक भी कांपने लगे तेरे झुकन से
है आसमां पे इन्कलाव दिखादे अपने खून से

जमी नहीं तेरा वतन शहीद हो—वतन

☐ शहीद (पुरानी) फिल्म

सन् सत्तावन

सिंहासन हिल उठे राजवशों ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी।।
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने को सबने मन में ठानी थी।।

चमक उठी सन् सत्तावन में यह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।।1।।

अनुनय विनय नहीं सुनती है विकट शासकों की माया।
व्यापारी बन रहे चाहता था जब वह भारत आया।।
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गयी काया।
राजाओं, नव्वावों को भी उसने पैरों ठुकराया।।

रानी दासी बनी, बनी वह दासी अब महारानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।।2।।

छिनी राजधानी देहली की, लखनऊ छीना बातों बात।
कैद पेशवा था बिठुर में, हुआ नागपुर का भी घात।।
उदयपुर, तंजौर, सितारा, करनाटक की कौन बिसात।
जब कि सिन्धु, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात।

बंगाल, मद्रास आदि की भी तो यही कहानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी।।3।।

रानी रोयी रनवासों में, बेगम गम से थी बेजार।
उनके गहने कपड़े बिकते थे, कलकत्ते के बाजार।।
सरे आम नीलाम छापते थे, अंग्रेजों के अखबार।
नागपुरी ये जेवर ले लो, लखनऊ के लो नौलखहार।।

यों परदे की इज्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी ।।4।।

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान।
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान।
नाना, धुन्धूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान।
बहिन छबीली ने रणचण्डी का कर दिया प्रकट आह्वान ।।

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हे तो सोयी ज्योति जगानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी ।।5।।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगायी थी।
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम् से आयी थी ।।
झांसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छायी थी।
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचायी थी ।।

जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी।
बुंदेले हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी ।।6।।

इस स्वतन्त्रता महायज्ञ मे कई वीरवर आये काम।
नाना, धुन्धूपंत, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम ।।
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवरसिह सैनिक अभिराम।
भारत के इतिहास गगन में, अमर रहेंगे जिनके नाम ।।

कैसे भूली जा सकती है, उनकी जो कुर्बानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी ।।7।।

इनकी गाथा छोड़ चले हम झांसी के मैदानों मे।
जहाँ खडी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मैदानों मे ।।
लेफ्टिनेंट वौकर आ पहुँचा, आगे बढा जवानों में।
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व असमानों में ।।

जख्मी होकर वौकर भागा, उसे अजब हैरानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी ।।8।।

रानी बढ़ी कालपी आयी, कर सौ मील निरन्तर पार।
घोड़ा गिरा भूमि पर थक कर, गया स्वर्ग तत्काल सिधार ।।

यमुना तट पर अंग्रेजो ने फिर खायी रानी से हार ।
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार ।।

अंग्रेजों के मित्र सिन्धिया ने छोड़ी रजधानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आयी थी ।
अब के जनरल स्मिथ सन्मुख था, उसने मुँह की खायी थी ।।
काना और मंदरा सखियाँ, रानी के संग आयी थी ।
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने, भारी मार मचायी थी ।।

पर पीछे ह्यूरोज आ गया, हाय ! घिरी अब रानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।।10।।

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार ।
किन्तु सामने नाला आया था, यह संकट विषम अपार ।।
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार ।
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार ।।

घायल होकर गिरी सिंहनी, उसे वीरगति पानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।।11।।

रानी गयी सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी ।
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी ।।
उम्र अभी तेईस मात्र थी, मनुज नहीं अवतारी थी ।
हमको जीवित करने आयी, बन स्वतन्त्रता नारी थी ।

दिखा गयी पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी ।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी ।।12।।

☐ सुभद्राकुमारी चौहान

ये किसका लहू है

ऐ रहबरे–मुल्को–क़ौम[1] ज़रा
आँखें तो उठा, नज़रें तो मिला
कुछ हम भी सुनें, हमको भी बता !
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

धरती की सुलगती छाती के बेचैन शरारे पूछते हैं
तुम लोग जिन्हें अपना न सके, वो खून के धारे पूछते हैं
सड़कों की ज़बां चिल्लाती है, सागर के किनारे पूछते हैं

ये किसका लहू है कौन मरा ?
ऐ रहबरे–मुल्को–क़ौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

वो कौन-सा जज़्बा था जिससे फर्सूदा[2] निज़ामे-ज़ीस्त[3] हिला
झुलसे हुए वीरां गुलसन में इक आस-उमीद का फूल खिला
जनता का लहू फौजों से मिला, फौजों का लहू जनता से मिला

ये किसका जुनूं है, कौन मरा ?
ऐ रहबरे–मुल्को–क़ौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

क्या क़ौमों-वतन की जय गाकर मरते हुए राही गुंडे थे ?
जो देश का परचम[4] ले के उठे, वो शोख सिपाही गुंडे थे ?
जो बारे गुलामी सह न सके, वो मुजरिमे-शाही गुंडे थे ?

ये किसका लहू है, कौन मरा ?
ऐ रहबरे–मुल्को–क़ौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

ऐ अज्मे-फ़ना[5] देने वालों, पैग़ामे-बक़ा[6] देने वालों !
अब आग से क्यों कतराते हो, शोलों को हवा देने वालों !
तूफ़ानों से अब क्यों डरते हो, मौजों को[7] सदा[8] देने वालों !

क्या भूल गये अपना नारा ?
ऐ रहबरे–मुल्क–क़ौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

समझौते की उम्मीद सही, सरकार के वायदे ठीक सही
हां मश्के सितम[9] अफ़साना सही, हां प्यार के वादे ठीक सही
अपनों के कलेजे मत छेदो, अगिकार के वादे ठीक सही

जमहूर से[10] यूं दामन न छुड़ा
ऐ रहबरे मुल्को–क़ौम बता
ये किसका लहू है, कौन मरा ?

हम ठान चुके हैं अब जी में, हर ज़ालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो, हम आगे बढ़ते जायेंगे
हर मंजिले–आज़ादी की क़सम, हर मंजिल पर दोहरायेंगे

ये किसका लहू है कौन मरा ?
ऐ रहबरे–मुल्को–क़ौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

☐ साहिर लुधियानवी

1–देश और राष्ट्र के नेता, 2–जीर्ण-शीर्ण 3–जीवन-व्यवस्था। 4. झंडा
5–मृत्यु का संकल्प 6–जीवन संदेश, 7–लहरों को 8–आवाज़,
9–अत्याचार का अभ्यास 10–जनता से।

अमर निशानी

यह अमर निशानी किसकी है ?
बाहर से जी, जी से बाहर
तक, आनी–जानी किसकी है ?
दिल से, आँखों से, गालों तक
यह तरल कहानी किसकी है ?
यह अमर निशानी किसकी है ?

रोते रोते भी आँखें मुँद
जायें, सूरत दिख जाती है;
मेरे आँसू में मुसक मिलाने
की नादानी किसकी है ?
यह अमर निशानी किसकी है ?

सूखी अस्थि, रक्त भी सूखा,
सूखे दृग के झरने,
तो भी जीवन हरा ! कहो
मधुभरी जवानी किसकी है ?
यह अमर निशानी किसकी है ?

रैन अंधेरी, बीहड़ पथ है,
यादें थकी अकेली,
आँखें मूँदे जाती हैं,
चरणों की बानी किसकी है ?
यह अमर निशानी किसकी है ?

आँखें झुकीं, पसीना उतरा,
सूझे ओर न छोर,
तो भी चढ़ूं, खून में यह
दमदार खानी किसकी है ?

यह अमर निशानी किसकी है ?

मैंने कितने धुन से साजे
मीठे सभी इरादे,
किन्तु सभी गल गये, कि
आँखें पानी-पानी किसकी हैं ?

यह अमर निशानी किसकी है ?

जो पर, सिंहासन पर,
सूली पर, जिसके संकेत चढ़ू
आँखों में चुभती-भाती
सूरत मस्तानी किसकी है ?

यह अमर निशानी किसकी है ?

☐ माखनलाल चतुर्वेदी

उनको सिजदा,[1] उन्हें सलाम

है गुलशन ग्राबाद जिन्हों से,
उनको सिजदा उन्हें सलाम।

वेद-उच्चारण तपोवन-ऋषिगण,
उनसे जगत-गुरु का नाम।

सारे ग्रसुर संहारे, जनसुख,
ग्रादर्श पुरुष रहे श्रीराम।

दुर्योधन दुष्टों का डेरा,
पाडवों के संग श्री घनश्याम।

कलिंग युद्ध मानवता जागी,
ग्रशोक राज्य शांति पैगाम।

धन-धान्य कला उत्कर्ष गुप्त-काल,
मिला भारत स्वर्ण चिड़ी उपनाम।

जन सेवक कवि हृदय हर्ष, स्थापित
शंकराचार्य के चार एकता धाम।

वीर पृथ्वीराज ग्रापस में झगड़े
जयचन्दों से वतन गुलाम।

जन-कल्याण, व्यवस्थित ग्रकबर
बेजोड़ प्रताप मुक्त सग्राम

1. सिर झुकाना।

रदास, रहीम, कबीरा रोया,
नानक क्यों अपने घर शाम।

अलग-अलग राहों में बटकर,
अहम् की बातें करे तमाम।

बिछुड़ गये जग की धारा से,
फिर अंग्रेजों के हुए गुलाम।

पुनर्जागरण युग की बेला,
समझा आजादी पहला काम।

शांत–क्रान्ति से आजादी,
लिए तिरगा मरे अनाम।

उनको सिजदा उन्हें सलाम,
खेत हुए जो वतन के काम।

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

बदलता युग

लो बदलता है जमाना !
ज्वाल जग में लग गई है,
आग जीवन की नई है,
जल रहा है जीर्ण जर्जर-टूट मिटता सब पुराना !

ध्वंस की लपटें भयंकर,
छा रही सारे गगन पर
वेग अधुनाधुंध है जिसका असम्भव है दबाना !

बढ़ रहा प्रत्येक जन-जन,
रोशनी में मुक्त कन-कन,
वास्तविकता सामने आयी, न अब कोई बहाना !

रोष इससे तुम करो ना,
द्रोह साँसे भी भरो ना,
यह सतत् बढ़ता रहेगा, व्यर्थ काँटों का बिछाना !

☐ डॉ० महेन्द्र भटनागर

खण्ड 'स'

प्रेरणा के स्वर

मुक्त राष्ट्र के तरुणों से

खोलो द्वार रुद्ध मानस के, गई दासता रात,
जल, थल, नभ पर स्वतंत्रता का, फैला शुभ्र प्रभात।

अपमानित 'अछूत' कहलाकर, थे जो मनुज अनेक,
दे समत्व का स्थान, करो उनका आदर अभिषेक।

मुक्त करो शिशु को, नारी के सब बंधन दो खोल,
गूँजे मुक्त मनुजता की जय से, भूगोल-खगोल।

विस्तृत वसुधा के कण-कण के, तुम्हें बुलाते प्राण,
मुक्त दिशाओं का प्रस्तुत है, आज अभय-वरदान।

सुनो नील निस्सीम गगन के, अन्तर का आह्वान,
हे तारुण्य स्वतन्त्र राष्ट्र के! सुनो सिन्धु का गान।

करो हिमालय के शिखरों पर अन्वेषण-अभिमान,
प्रकृति तुम्हारी सहचर, अनुचर ज्ञान और विज्ञान।

मांसल बाहु, भाल उन्नत, दृढ़ पदक्षेप सविवेक,
हो उदार तब दृष्टि कि जिसमें अखिल विश्व हो एक।

मातृभूमि का भरो निरंतर, वैभव-कोष विशाल,
पर, तुमसे कोई कोना जग का न बने कंगाल।

तुम जिसकी जय-ध्वजा, राष्ट्र की वह दृढ़ नीव किसान,
कभी न भूलो उसे कि उसका अतुलनीय है दान।

और, राष्ट्र-निर्माता, जो पा सका न आगे स्थान,
श्रमजीवी, पीछे रह करता श्रम, भारत संतान।

इन दोनों के रक्तस्वेद का अथक मूक बलिदान,
लाया नवयुग, नवजीवन, नव-सस्कृति, नया विधान।

गिरि-से चलें सिंधु की लहरों पर विशाल जल-यान
और व्योम में उड़े तुम्हारे द्रुतगति विपुल विमान।

किन्तु, करो भू पर श्रम करने वालों का सम्मान,
शक्ति-स्रोत हैं अथक तुम्हारे ये मजदूर-किसान।

सेवक बनो, बनो प्रहरी, तुम इनके सैनिक वीर,
रक्षक बनो, इन्ही के हित मे अर्पित करो शरीर।

निज प्रतिभा, मेधा का तानो ऐसा महा-वितान,
जिसकी छाया में सुख पावें ये मजदूर-किसान।

ऊपर राजनीति-इगित पर, जब तुम भरो उड़ान,
नीचे चालक चक्र और हलके गाते हों गान।

☐ जगन्नाथप्रसाद मिलिंद

स्वदेश-गीत

सबको स्वतन्त्र कर दे यह सगठन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

(1)

जब तक भड़कती नश एक भी बदन मे ।
हो रक्त बूँद भर भी जब तक हमारे तन में ।।
छीने न कोई हमसे प्यारा वतन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा मे तन हमारा ।।

(2)

कोई दलित न जग में हमको पड़े दिखाई ।
स्वाधीन हों सुखी हो सारे अछूत भाई ।।
सबको गले लगा ले यह शुद्ध मन हमारा ।
छूटे स्वदेश ही की सेवा मे तन हमारा ।।

(3)

अचरज नही कि साथी भग जायें छोड़ भय में ।
घबरायें क्यों ? खड़े हैं भगवान जो हृदय में ।।
धुन एक ध्यान में है, विश्वास है विजय में ।
हम तो अचल रहेंगे, तूफान में प्रलय में ।।
कैसे उजाड़ देगा कोई चमन हमारा ?
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा ।।

(4)

हम प्राण होम देंगे, हँसते हुए जलेंगे।
हर एक साँस पर हम आगे बढ़े चलेंगे।।
जब तक पहुँच न लेंगे तब तक न साँस लेंगे।
वह लक्ष्य सामने है पीछे नहीं टलेंगे।।
गायें सुयश खुशी से जग में सुजन हमारा।
छूटे स्वदेश ही की सेवा में तन हमारा।।

☐ रामनरेश त्रिपाठी

चेतावनी

है सरल आज़ाद होना,
पर कठिन आज़ाद रहना।

राष्ट्र से तूने कहा है
क्रोध निर्बलता हृदय की,
स्वार्थ है संताप की जड़,
शील है अनमोल गहना॥

है सरल आज़ाद होना,
पर कठिन आज़ाद रहना।

यह न समझो मुक्ति पाकर,
कर चुके कर्त्तव्य पूरा,
देश को श्री शक्ति देने
के लिए है कष्ट सहना।

है सरल आज़ाद होना,
पर कठिन आज़ाद रहना।

देश को बलयुक्त करने
यदि न संयम से चले हम,
काल देगा दासता की
फिर हमें जंजीर पटना।

है सरल आज़ाद होना,
पर कठिन आज़ाद रहना।

भीत हो कानून से मन
राह पर आता नहीं है,
अग्रसर होना कुपथ पर
वासना का मान कहना।

है सरल आज़ाद होना,
पर कठिन आज़ाद रहना।

मान कर आदेश तेरा
ले अहिंसा पथ ग्रहण कर,
बन्द होगा भूमि पर तब,
मानवों का रक्त बहना।

है सरल आजाद होना,
पर कठिन आज़ाद रहना।

☐ हरिकृष्ण प्रेमी

गुलज़ारे-वतन

फूलों का कुंजे-दिलकश[1] भारत में इक बनायें
हुब्बे-वतन[2] के पौधे उसमें नये लगायें
इक-इक गुल में फूँके रूहे-शमीमे-वहदत[3]
इक-इक कली को दिल के दामन से दें हवाएँ
मुर्गाने-बाग[4] बनकर उड़ते फिरें हवा में
नग्मे[5] हों रूह-अफ़ज़ा[6] और दिलरुबा सदाएँ[7]

छायी हुई घटा हो, मौसम तरब-फ़ज़ा[8] हो
झोंके चलें हवा के, अशजार[9] लहलहायें।

इस कुंजे-दिलनशी[10] में कब्ज़ा न हो खिजा[11] का
जो हो गुलों का तख्ता,[12] तख्ता हो इक जिनां[13] का
बुलबुल को हो चमन में सैयाद का न खटका[14]
खुश-खुश हो शाखे-गुल[15] पर, ग़म हो न आशियां[16] का
मौसम हो जोशे-गुल[17] का और दिन वहार[18] के हों
आलम अजीब दिलकश[19] हो अपने गुलसितां का

मिल-मिलके हम तराने हुब्बे-वतन के गायें
बुलबुल है जिस चमन के, गीत उस चमन के गायें।

☐ दुर्गा सहाय 'सुरूर' जहानाबादी

1–मोहन कुंज 2–देश-भक्ति 3–अद्वैत की सुगंध 4–उपवन के पक्षी 5–गीत 6–आत्मा को शांति देने वाले 7–आवाजें 8–आनन्ददायक, सुहाना 9–वृक्ष 10–आकर्षण कुंज 11–हेमन्त 12–क्यारी 13–स्वर्ग 14–भय 15–फूल की डाली 16–घोंसला 17–वसन्त 18–वसन्त 19–सुहाना।

हम हैं सच्चे हिन्दुस्तानी

हम बालक, वृद्ध, जवान सभी हैं—सच्चे हिन्दुस्तानी ।
रंगरूप और तन से हैं हम,
रोम रोम और मन से हैं हम—सच्चे हिन्दुस्तानी ।
हम बालक, वृद्ध, जवान सभी हैं—सच्चे हिन्दुस्तानी ।
सभी दिलों में खुशी अनुपम—हम हैं हिन्दुस्तानी ।
सभी रगों मे खून बह रहा—वह है हिन्दुस्तानी ।
हम बालक, वृद्ध, जवान सभी हैं सच्चे हिन्दुस्तानी ।
सोलह हमारे संस्कार हैं—सारे हिन्दुस्तानी ।
माँ की ममता, मीठी लोरी, सुन्दर रिश्ते हिन्दुस्तानी ।
हम बालक, वृद्ध, जवान सभी हैं—सच्चे हिन्दुस्तानी ।
चाल-चलन और तरीके शिक्षा हिन्दुस्तानी ।
आज्ञाकारी बच्चे है हम—बच्चे हिन्दुस्तानी ।
हम बालक, वृद्ध, जवान सभी है—सच्चे हिन्दुस्तानी ।
रंग रंगीला आँचल अपना—हर आँचल हिन्दुस्तानी ।
जन्म जन्म की एक ख्वाहिश—रहें हम हिन्दुस्तानी
हम बालक, वृद्ध, जवान सभी हैं—सच्चे हिन्दुस्तानी ।

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

दे मैं करूँ वरण

दे, मैं करूँ वरण
जननि, दुःखहरण पद-राग-रंजित मरण।
भीरुता के बँधे पाश सब छिन्न हों,
मार्ग के रोध विश्वास से भिन्न हों,
आज्ञा, जननि, दिवस-निशि करूँ अनुसरण।
लांछना, इन्धन हृदय-तल जले अनल,
भक्ति-नत-नयन मैं चलूँ अविरत सबल
पारकर जीवन-प्रलोभन समुपकरण।
प्राण-सधान के सिन्धु के तीर मैं,
गिनता रहूँगा न, कितने तरंग है,
धीर मैं ज्यों समीरण करूँगा तरण।

☐ सूर्य्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में विंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि ! डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली ! उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

☐ माखनलाल चतुर्वेदी

अपनी आजादी को

अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नही,

सर कटा सकते है लेकिन सर झुका सकते नही।

हमने सदियों में यह आजादी की नियामत पाई है,

सैकड़ों कुर्बानियाँ देकर यह दौलत पाई है।

मुस्करा कर खाई हैं सीने में हमने गोलियाँ,

खाक में अपनी इज्जत को मिला सकते नही।

क्या चलेगी जुल्म की अहले वफ़ा के सामने,

जा नही सकता कोई शोला हवा के सामने।

लाख फौजें लेके आये अमन का दुश्मन कोई,

कोई रुक सकता नहीं हमारी एकता के सामने।

हम वह पत्थर है जिसे दुश्मन हिला सकता नहीं,

वक्त की आवाज के हम साथ चलते जायेंगे।

हर कदम पर जिन्दगी का रुख बदलते जायेंगे,

गैर वतन में मिलेगा कोई गद्दारे वतन।

अपनी ताकत से हम उसका सर कुचलते जायेंगे,

एक धोखा खा चुके हैं और खा सकते नही—वन्देमातरम्।

हम वतन के नौजवान हैं हमसे जो टकरायेगा,

वह हमारी ठोकरों से खाक में मिल जायेगा।

आसमान पर यह तिरंगा उमर भर लहरायेगा,

जो सबक बापू ने सिखलाया भूल सकते नहीं।

दुश्मनों के हम दुश्मन यार के हम यार है,

अमन के फूलों की डाली जंग के हथियार है।

जिस किसी में हौसला हो आजमा कर देखले,

जिन्दगी के वास्ते मरने को तैयार है।

बढ़ चुके जो कदम पीछे कदम हटा सकते नहीं,

☐ लीडर फिल्म से

नव-संस्कृति

भाव कर्म में जहाँ साम्य हो सतत,
जग जीवन में हों विचार जन के रत।

ज्ञान-वृद्ध, निष्क्रिय न जहाँ मानव मन,
मृत आदर्श न बंधन, सक्रिय जीवन।

रूढ़ि रीतियाँ जहाँ न हो आराधित,
श्रेणि वर्ग मे मानव नहीं विभाजित।

धन बल से हो जहाँ न जन श्रम शोषण,
पूरित मन जीवन के निखिल प्रयोजन।

जहाँ दैन्य जर्जर, अभाव ज्वर पीड़ित,
जीवन यापन हो न मनुज को गर्हित।

युग युग के छाया भावों से त्रसित,
मानव प्रति मानव मन हो न सशंकित।

मुक्त जहाँ मन की गति, जीवन में रति,
भव मानवता में जन जीवन परिणति।

संस्कृत वाणी, भाव, कर्म, संस्कृत मन,
सुन्दर हो जनवास, वसन, सुन्दर तन।

ऐसा स्वर्ग धरा मे हो समुपस्थित,
नव मानव संस्कृति किरणों से ज्योतित।

☐ सुमित्रानन्दन पन्त

प्रभाती

किस सुख की निद्रा में सोये तम का अंचल तान,
जागो, वैभव लुटा तुम्हारा जागो, हुआ विहान।
हृदय शून्य है, अन्धकार है लुटी ज्ञान की मणियाँ,
हाथ-पाँव मे पड़ी हुई हैं जटिल रूढ़ि की कड़ियाँ।
ऋषियों की संतान ! जागो, हुआ विहान !

सोने-चांदी के टुकड़ों पर, बेच रहे हो बाल,
सरस्वती के लाल, पतन की ओर तुम्हारी चाल।
विधवाओं के नयन-नीर से घर का कोना गीला,
जागो, आज तुम्हारे जीवन के सुख का मुख पीला।
हे भारत-सतान ! जागो, हुआ विहान !

रेखाओं में धर्म, चारु चन्दन में ही है कर्म,
तुम्हें सत्य के आँगन में आते आती है शर्म।
जागो, जागो, ए सदियो के सोये हुए प्रकाश,
एक बार फिर, तिमिर वक्ष पर हो किरणों का रास।
ऋषियो की सन्तान ! जागो, हुआ विहान !

☐ सोहनलाल द्विवेदी

चिर सजग आँखें उनींदी.....

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना !
जाग तुझको दूर जाना ।

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले,

आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जागकर विद्युत्-शिखाओं में निठुर तूफान बोले ।

पर तुझे है नाश पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना ।
जाग तुझको दूर जाना ।

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बन्धन सजीले ?
पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रँगीले ?

विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन
क्या डुबा देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?

तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना !
जाग तुझको दूर जाना ।

वज्र का डर एक छोटे अश्रुकण में धो गलाया,
दे किसे जीवन-सुधा दो घूंट मदिरा माँग लाया ?

सो गयी आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या ?
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया ?

अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना ?
जाग तुझको दूर जाना ।

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग मे सजेगा आज पानी;

हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी।

है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना,
जाग तुझको दूर जाना।

☐ महादेवी वर्मा

जागरण-प्रसंग

नव-जागरण-प्रसंग
जाग तू उज्वल अभय अभग !

रूक्ष रसा के अन्तस्तल से
ला भर-भर कर रस के कलसे ।
अचला के चिर चल-चंचल हे !

सुमन-सुहास-सुरंग,
जाग तू मेरे अभय अभंग !

भीतर का बाहर विस्फोटन,
थिरता का अस्थिर आलोड़न,
गहरी डुबकी का उत्तोलन,

उत्थित उद्धि-उमंग
जाग तू उज्वल अभय अभंग !

सूर्य-चन्द्र-तारे झोली में,
झंझा है जिसकी बोली में,
रख दे उस निशि की भोली मे

दीपक एक इकंग,
जाग तू उज्वल अभय अभग !

☐ सियारामशरण गुप्त

जाग्रति-गीत

हे ! तात तात हे ! भ्रात भ्रात, अपनी
हिन्द वतन बिन क्या बिसात ।
न जान रहे, पहचान रहे, गर
बिसर गया नामों निशां हमारे हाथ ।
बेड़ी के घाव भरे ही नहीं, फिर
क्यों कटे कटे, हिंसक, अशांत ?
हम मुक्त हिन्द में हिन्दी सम, फिर
क्या राम रहीम, क्या जात-पाँत ?
हैं निर्बल अबला बाला, जटिल रूढ़ि, और
क्यों दीन हीन निर-अक्षर तात ?
ले अंगड़ाई, हे ! तरुणाई, नवबेला मे
जाग जाग हमवतन भ्रात !

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

जागरण का गान हूँ

स्वप्न हूँ मैं स्वप्न का निर्माण हूँ।
जागरण हूँ जागरण का गान हूँ।

बीज ने घुल कर धरा की साँस में,
स्वप्न देखे फूल के, अवकाश में,
जिस नये सुख के, सुरभि के, कुन्द के,
जिस नये उन्मुक्त छवि के, छन्द के,
कुसुम है आकृति उसी अवसान की,
कल्पना के बीज के प्रतिदान की,

इस तरह मैं भी विगत के स्वप्न का–
हर नया विश्वास हूँ, आह्वान हूँ।

तिमिर ने जो स्वप्न देखे रात में,
वह उषा बन उभर आया प्रात: में,
निशा की काली लटें उजली हुई,
मेघ की धड़कन चली बिजली हुई,
सुनहली दुनिया हुई आकाश भी,
गमक उठा गगन का मधुमास भी,
मौन थी वीणा अकम्पित तार से,
मैं उसी का स्वर, उसी की तार हूँ।

स्वप्न हूँ मैं स्वप्न का निर्माण हूँ।
जागरण हूँ जागरण का गान हूँ।

स्वप्न देखे जो कि झरने ने सुबह,
बूंद को उद्धम धारा में उमँह,
नाच कर अटखेलियां करता चला,
कल्पना के स्रोत का आंचल हिला
बूंद वह आकठ तट का हार है,
मादिनी इस भूमि का शृंगार है,
इस तरह मैं भी सुबह के स्रोत की—
एक अनजानी नयी मुस्कान हूँ।
काल-सा गतिमान मेरा रूप है,
है कहीं छाया कहीं पर धूप है,
देवता जो था कभी आकाश का—
आज धरती पर वही इंसान हूँ।

स्वप्न हूँ, मैं स्वप्न का निर्माण हूँ।
जागरण हूँ, जागरण का गान हूँ।

प्रेरणा के स्रोत मेरे प्राण हैं,
उभरते जिससे सभी निर्माण है;
यह जगत उस स्रोत का प्रतिविम्ब है,
और मै उसकी नयी पहचान हूँ।
काल-सा गतिमान मैं रुकता नही,
हारता हूँ मौत से झुकता नही;
खा रहा है काल मुझको खा रहा,
किन्तु मैं खाकर उसे बढ़ता रहा;
आज के सब स्वप्न मेरी सांस के—
कल बनेंगे जागरण मधुमास के,
हर नया कल आज की सतान है,
हर नये दिन का सजग अनुमान हूँ

स्वप्न हूँ मै स्वप्न का निर्माण हूँ।
जागरण हूँ जागरण का गान हूँ।

☐ उदयशंकर भट्ट

निर्माण

निर्माण कर, निर्माण कर !

जीवन, घड़ी निर्माण की,
आदान और प्रदान की,

पावन मनोहर वेदिका,
यह त्याग की, बलिदान की

इस पुण्य पथ पर बढ़ अभय,
अपने विसर्जित प्राण कर !

निर्माण कर, निर्माण कर !

निज अस्थि मजा मांस की
ले ईंट चूना कंकड़ी–

रच भव्य जीवन की पुन:
अट्टालिका अपनी बड़ी !

प्रासाद बन सकता अभी
उजड़ा हुआ यह खण्डर !

निर्माण कर, निर्माण कर !

कितने सुघड़ तव हस्त थे !
दृग में मधुर सपने नये !

तुझ में अमर प्रतिभा भरी–
कंचन बने–जो कुछ, छुए !

मत बैठ नभ में ताकता—
निज हाथ पर यों हाथ धर !

निर्माण कर, निर्माण कर !

अपने घरौंदे तू बना !
तट है बड़ा, रेता घना !

संसार भी तो देख ले—
रमणीय तेरी कल्पना !

निर्माण का आनन्द ले—
क्या है, अगर आवे लहर !

निर्माण कर, निर्माण कर !

☐ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

नव निर्माण का संकल्प

विषम भूमि नीचे, निठुर व्योम ऊपर !
यहाँ राह अपनी बनाने चले हम,
यहाँ प्यास अपनी बुझाने चले हम,
जहाँ हवा औ पाँव की जिन्दगी हो
नई एक दुनिया बसाने चले हम,
विषम भूमि को सम बनाना हमें है
निठुर व्योम को भी झुकाना हमें है,
न अपने लिए, विश्व-भर के लिए ही
धरा-व्योम को हम रखेंगे उलटकर ।
विषम भूमि नीचे, निठुर व्योम ऊपर !
अगम सिन्धु नीचे, प्रलय मेघ ऊपर !
लहर गिरि-शिखर सी उठी आ रही है,
हमें घेर झंझा चली आ रही है,
गरजकर, तड़पकर, बरसकर घटा भी
नदी को हमारे डरा जा रही है,
नहीं हम डरेंगे, नहीं हम रुकेंगे,
न मानव कभी भी प्रलय मे झुकेंगे,
न लंगर गिरेगा, न नौका रुकेगी
रहे तो रहे सिन्धु बन आज अनुचर !
अगम सिन्धु नीचे प्रलय मेघ ऊपर !

कठिन पंथ नीचे, दुसह अग्नि ऊपर !
बना रक्त से कंटकों पर निशानी
रहे पंथ पर लिख चरण ये कहानी,
बरसती चली जा रही व्योम ज्वाला
तपाते चले जा रहे हम जवानी,
नहीं पर मरेंगे, नहीं हम मिटेंगे
न जब तक यहाँ विश्व नूतन रचेंगे,
यही भूख तन में, यही प्यास मन में,
करें विश्व सुन्दर, बने विश्व सुन्दर !
कठिन पथ नीचे, दुसह अग्नि ऊपर !

□ शम्भुनाथ सिंह

नव-निर्माण पुकार रहा है

चलो साथियो ! तुम्हे देश का नव-निर्माण पुकार रहा है।
कोटि-कोटि कर मे कुदालियाँ और फावड़े लिये बढ़ चलो,
हिमगिरि के उत्तुग शिखर पर, 'तेनसिंह' की तरह चढ़ चलो,
पर्वत पर पथ, सेतु सिन्धु मे राष्ट्रोत्थान पुकार रहा है।
धरती का सीना चीरो तो उर्वरता भी बढ जायेगी,
रक्त, स्वेद की भाँति बहाओ, शस्य श्यामला लहरायेगी,
तुम्हें गाँव का खेत बुलाता है, खलिहान पुकार रहा है।
बाँटो, धन, धरती को बाँटो, अग जग में समरसता लाओ,
मातृभूमि की सेवा करके मानव जीवन सफल बनाओ,
सत 'विनोबा' तुम्हे बुलाये, 'भूदान' पुकार रहा है।
जाति-पाँति के बन्धन तोड़ो, छुआछूत का भूत भगा दो,
कन्धे से कन्धा मिल जाये, भारत-भू को स्वर्ग बना दो,
भूखा, नंगा पड़ा झोंपड़ी में भगवान पुकार रहा है।
सिंह राजपूतों ! राष्ट्रपिता का प्रण भी तुम्हे निभाना होगा,
रामराज्य के सपने को सद्य, साकार बनाना होगा,
तुम्हें सपथ है नयी 'योजना' का अभियान पुकार रहा है।
चलो साथियो ! तुम्हें देश का नव-निर्माण पुकार रहा है।

☐ मुख्तारसिंह 'दीक्षित'

पुनः नया निर्माण करो

उठो धरा के अमर सपूतो
पुन. नया निर्माण करो।

जन-जन के जीवन मे फिर से
नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो।
नया प्रात है, नई बात है,
नई किरण है, ज्योति नई।

नई उमंगे, नई तरंगे,
नई आस है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनो मे,
नई-नई मुसकान भरो।

उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो।
डाल-डाल पर बैठ विहग कुछ
नए स्वरों में गाते है।

गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे
मस्त हुए मँडराते हैं।
नवयुग की नूतन वीणा मे
नया राग, नवगान भरो।

उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो।

कली-कली खिल रही इधर
वह फूल-फूल मुस्काया है

धरती माँ की आज हो रही
नई सुनहरी काया है।

नूतन मगलमयी ध्वनियों से
गुंजित जग-उद्यान करो।

उठो धरा के अमर सपूतो
पुनः नया निर्माण करो।

सरस्वती का पावन मन्दिर
यह सम्पत्ति तुम्हारी है।

तुम में से हर बालक इसका,
रक्षक और पुजारी है।

शत-शत दीपक जला ज्ञान के
नवयुग का आह्वान करो।

उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो।

☐ द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

लौह पुरुष, तू रोता क्यों है !

लौह पुरुष ! तू रोता क्यों है !
नयनों के ये हीरे मोती, यों मिट्टी में खोता क्यों है !
लौह पुरुष ! तू रोता क्यों है !
तेरी ही भौंहों से इंगित—
बिजली बन होते प्रतिबिंबित,
पर्वत को ठुकराने वाले ! भार व्यथा का ढोता क्यों है !
लौह पुरुष ! तू रोता क्यों है !
मुक्त पड़े पथ सारे तेरे,
धरती, सिन्धु, सितारे तेरे,
धरती फाड़, समुद्रों को मथ ! दास किसी का होता क्यों है !
लौह पुरुष ! तू रोता क्यों है !
देख, हो रहा सुन्दर तड़का,
उड, अपनी पाँखों को फड़का,
दीन नयन से देख रहा तू बन पिंजरे का तोता क्यों है !
लौह पुरुष ! तू रोता क्यों है !

□ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

मुस्कराकर चल मुसाफिर....

पथ पर चलना तुझे तो मुस्कराकर चल मुसाफिर !

वह मुसाफिर क्या जिसे कुछ शूल ही पथ के थका दें ?
हौसला वह क्या जिसे कुछ मुश्किलें पीछे हटा दे ?
वह प्रगति भी क्या जिसे कुछ रंगिनी कलियाँ तितलियाँ;
मुस्कराकर गुनगुनाकर ध्येय-पथ, मंजिल भुला दें ?
जिन्दगी को राह पर केवल वही पथी सफल है,
आँधियों मे, बिजलियों में जो रहे अविचल मुसाफिर !
पथ पर चलना तुझे तो मुस्कराकर चल मुसाफिर !

जानता जब तू कि कुछ भी हो तुझे बढ़ना पड़ेगा,
आँधियों से हो न खुद से भी तुझे लड़ना पड़ेगा,
सामने जब तक पड़ा कर्त्तव्य-पथ तब तक मनुज ओ !
मौत भी आये अगर तो मौत से भिड़ना पड़ेगा,
है अधिक अच्छा यही फिर पथ पर चल मुस्कराता,
मुस्कराती जाय जिससे जिन्दगी असफल मुसाफिर !
पथ पर चलना तुझे तो मुस्कराकर चल मुसाफिर !

याद रख जो आंधियों के सामने भी मुस्कराते।
वे समय के पथ पर पद चिन्ह अपने छोड़ जाते,
चिन्ह वे-जिनको न धो सकते प्रलय-तूफान घन भी
मूक रह कर जो सदा भूले हुओं को पथ बताते
किन्तु जो कुछ मुश्किलें ही देख पीछे लौट पड़ते,
जिन्दगी उनकी उन्हें भी भार ही केवल मुसाफिर !
पथ पर चलना तुझे तो मुस्कराकर चल मुसाफिर !

कंटकित यह पंथ भी हो जायगा ग्रासान क्षण में,
पाँव की पीड़ा क्षणिक यदि तू करे अनुभव न मन में,
सृष्टि सुख-दुख क्या हृदय की भावना के रूप हैं दो,
भावना की ही प्रतिध्वनि गूंजती भू, दिशि, गगन में
एक ऊपर भावना से भी मगर है शक्ति कोई,
भावना भी सामने जिसके विवश व्याकुल मुसाफिर !
पथ पर चलना तुझे तो मुस्कराकर चल मुसाफिर !

देख सर पर ही गरजते है प्रलय के काल बादल,
व्याल वन फुफकारता है सृष्टि का हरिताभ अंचल,
कटकों ने छेदकर है कर दिया जर्जर सकल तन,
किन्तु फिर भी डाल पर मुसका रहा वह फूल प्रतिपल,
एक तू है देखकर कुछ शूल ही पथ पर अभी से,
है लुटा बैठा हृदय का धैर्य, साहस बल मुसाफिर !
पंथ पर चलना तुझे तो मुस्कराकर चल मुसाफिर !

☐ नीरज

बढ़े चलो, बढ़े चलो

न हाथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो,

हटो, नहीं, डटो नहीं ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

रहे समक्ष हिम शिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए तन बिखर,

रुको नहीं, झुको नहीं ।
बढे चलो, झुको नहीं ।।

घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही सुधा का घूंट हो,

जिये चलो, मरे चलो ।
बढे चलो, बढे चलो ।।

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,

अड़ो वहीं, गड़ो वहीं ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।।

चलो नई मसाल हो,
जलो नई मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,

झुको नहीं, रुको नहीं।
बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

अशेष रक्त तोल दो,
स्वतन्त्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,

डरो नहीं, मरो नहीं।
बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

☐ सोहनलाल द्विवेदी

हमें यह पता है

रुकावट हटाते हुए हम चलेंगे,
अँधेरा मिटाते हुए हम चलेंगे,

हमें यह पता है—

उजेले में बिजली कभी दमदमाती नहीं है !
सजग रह सतत आज बढ़ते रहेंगे,
इमारत नई एक गढ़ते रहेंगे,

हमें यह पता है—

जवानी मनुज को कभी लड़खड़ाती नहीं है !
ठिठक कर रुकेंगी विरोधी हवाएँ,
फिसल कर गिरेंगी सभी आपदाएँ,

हमें यह पता है—

कि हिम्मत की साँसें कभी व्यर्थ जाती नहीं है !

☐ महेन्द्र भटनागर

भारत के भावी विद्वान

(1)

ाज कई वीरों के रहते हुआ न उन्नत हिन्दुस्तान,
ना सका कोई गुण विद्या वल में उसे न गौरववान ।
। भी धीरज धरो, डरो मत मेरे आज्ञाकारी प्रान,
वो कुछ कर दिखलायेंगे भारत के भावी विद्वान ।

(2)

जिनको वाल समझकर माता दूध पिलाती सुधा समान,
जिनको पाल हुई है जगतीतल में वह आनन्द निधान ।
जिनको 'लाल' 'लाल' कह उसने भुला दिया सुख दुख का ध्यान,
जानो उन्हें राष्ट्र की सम्पत्ति, भारत के भावी विद्वान ।

(3)

र्य कीर्ति के स्तम्भ सौख्य के हेतु महत्ता के अवतार,
ठिन समय में आशा के बस एक मात्र सच्चे आधार ।
ो तुम्हारा कष्ट हरेंगे, यही बनेंगे शक्ति निधान,
ता ! प्राण दे पालो, ये है भारत के भावी विद्वान ।

(4)

आओ इनकी शिक्षा के हित उथल पुथल करदें ससार,
इन्हें बनाएँ कला कुशल नव निपुण वीर धीमान उदार ।
डरे न, प्रण पर मरें, करें कर्त्तव्य, बनावें दृढ संतान,
भारतीय है वही, बनायें भारत के भावी विद्वान ।

(5)

शुभ वस्त्र हैं, बुद्धि शस्त्र हैं, पढते है वन में निःशक,
बढ़ा रहे है वल वैभव को, प्यारी मातृभूमि की अक ।
ब्रह्मचर्य रख सरस्वती पर दान करेंगे तन मन प्रान,
ये हैं निस्सदेह हमारे भारत के भावी विद्वान ।

(6)

किनको होगा जन्मभूमि के कष्टो का पूरा अनुमान ?
भाषा, भाव, भेष, भोजन मे भारतीयता का अभिमान ।
कौन हमारा दुःख हरेंगे हमें करेंगे गौरवमान ?
यह सुन सच्चे हृदय कहेंगे, भारत के भावी विद्वान ।

☐ माखनलाल चतुर्वेदी

सं गच्छध्वम्

स गच्छध्वं सं वदध्वं स वो मनासि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सजानाना उपासते ।।2।।
समानो मन्त्र समितिः समानी समानः मनः सहचित्तम् एषाम् ।
समानं मंत्रम् अभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।।3।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानम् अस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।4।।

ऋग्वेद 10-19

[हिन्दी में छायानुवाद]

(1)

एकता के सूत्र में बन्धे चलो,
एक हो तुम्हारी, चाल-ढाल ।
दिल मे दिल मिलाने वाली वार्ता,
बन्धुता बढाने वाली बोल-चाल ।
साम्यता के भाव, जोश, वल्वले,
यों उठें कि मन को दें बना विशाल ।।

(2)

अपना-अपना उचित भाग भोगकर
देवताओं की प्रथा निभाओगे ।
मनुजता को दिव्यता में ढ़ाल कर,
विज्ञ होते जाओगे, दक्ष होते जाओगे ।

(3)

हों समान भव्य लक्ष्य आपके
मंत्रणा, सलाह चले साथ-साथ।
एक सी लगन हो मन में, चित्त में,
सफलता मिलेगी देखो हाथों-हाथ।
एकता ही है महान श्रेय-मंत्र,
यज्ञ में आहूतियाँ दो साथ-साथ।

(4)

आपकी विचारधारा हो समान,
मन-कमल में एक-सी सुगन्ध हो।
एक स्वर में तंत्री हृदय की बजे,
साथ-साथ जीने में आनन्द हो।

□ ऋग्वेद से

सरगम चाहे अलग-अलग, पर सबके गीत समान रे !

धरती प्यारी, अम्बर प्यारा, प्यारा हर इंसान रे।
सरगम चाहे अलग-अलग, पर सबके गीत समान रे।
हम भारत के वीर सिपाही, सेवा अपना धर्म है।
चरणों में आँधी की गति है और हाथों में कर्म है।
रहते हम तैयार हमेशा भ्रातृ-प्रेम के नाम पर,
करते सब विश्वास हमारा, यही अनोखा मर्म है।

समता प्यारी, ममता प्यारी, प्यारा नव-उत्थान रे।
सरगम चाहे अलग-अलग, पर सबके गीत समान रे।

हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई-सब बाहर के नाम है,
सबके भीतर रमे हुए बस, एक सरीखे राम हैं।
सबको यही सिखाते भैया! गीता और कुरान है,
मन के द्वार खुले है, फिर क्या हिन्दू क्या इस्लाम है?

मंदिर प्यारा, मस्जिद प्यारी, प्यारे देव-स्थान रे।
सरगम चाहे अलग-अलग, पर सबके गीत समान रे।

हर मानव को गले लगाकर पूछो मन की बात रे।
सूखे उपवन को दे दो तुम सावन की बरसात रे।
काँटों की पीड़ा पर रखो फूलों की मुस्कान रे।
कलियों के घर पहुँचा दो तुम शबनम की सौगात रे।

तितली प्यारी, भँवरे प्यारे, प्यारा हर उद्यान रे।
सरगम चाहे अलग-अलग, पर सबके गीत समान रे।

☐ किशोर काबरा

करोड़ों प्राण न्यौछावर

तिरंगा है हमारी साधना का घर ।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर ।।

कि हम आजाद हैं झंडा उड़ाते हैं,
मगन होकर खुशी के गीत गाते हैं,
कठिन तप से मिला है देश यह प्यारा,
इसे हम जान से अपनी लगाते हैं,

न हो विश्वास देखो आजमाने पर ।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर ।

यहाँ पर प्यार की बरसात होती है,
सुनहरे दिन, सुनहरी रात होती है,
हमारा देश गौतम, राम, गांधी का,
सच्चाई की यहाँ हर बात होती है,

असम्भव झूठ का चढ़ना सच्चाई पर ।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर ।।

नहीं हम व्यर्थ की बातें बनाते हैं,
नहीं हम बल किसी से आजमाते हैं,
हमारे देश पर जब गोलियाँ चलती,
विवश हो हम तभी तोपें उठाते हैं,

महकते फूल भी हम, हैं विषैले शर ।
तिरंगे पर करोड़ों प्राण न्यौछावर ।।

☐ भवानी शंकर

पन्द्रह अगस्त

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना
प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस जन-मंथन से उठ आई
पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पाई दुख की
विगत साँवली कोर
ले युग की पतवार
बने अम्बुधि महान रहना
पहरुए, सावधान रहना
विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग बंदिनी हवाएँ
प्रश्नचिन्ह बन खड़ी हो गईं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इन्दु तुम

दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना
ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गये, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी
यह विश्वास अमर है
जनगंगा में ज्वार
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान ।

□ गिरिजाकुमार माथुर

गणतन्त्र दिवस

एक और जंजीर तड़कती है, भारत माँ की जय बोलो।
इन जंजीरों की चर्चा में कितनों ने निज हाथ बँधाए,
कितनों ने इनको छूने के कारण कारागार बसाए,
इन्हें पकड़ने में कितनों ने लाठी खाई, कोड़े ओड़े,
और इन्हें झटके देने में कितनों ने निज प्राण गवाए!
किन्तु शहीदों की आहों से शापित लोहा, कच्चा धागा।
एक और जंजीर तड़कती है, भारत माँ की जय बोलो।
जय बोलो उस वीर व्रती की जिसने सोता देश जगाया,
जिसने मिट्टी के पुतलों को वीरों का बाना पहनाया,
जिसने आजादी लेने की एक निराली राह निकाली,
और स्वय उस पर चलने में जिसने अपना शीश चढ़ाया,
घृणा मिटाने को दुनियाँ से लिखा लहू से जिसने अपने,
'जो कि तुम्हारे हित विष घोले, तुम उसके हित अमृत घोलो।'
एक और जंजीर तड़कती है, भारत माँ की जय बोलो।
कठिन नही होता है बाहर की बाधा को दूर भगाना,
कठिन नही होता है बाहर के बधन को काट हटाना,
गैरो से कहना क्या मुश्किल अपने घर की राह सिधारें,
किन्तु नही पहचाना जाता अपनों में बैठा बेगाना,
बाहर जब बेड़ी पड़ती है भीतर भी गाँठें लग जातीं,
बाहर के सब बंधन टूटे, भीतर के अब बंधन खोलो।
एक और जंजीर तड़कती है, भारत माँ की जय बोलो।
कटी बेड़ियाँ औ' हथकड़ियाँ, हर्ष मनाओ, मगल गाओ,

किन्तु यहाँ पर लक्ष्य नहीं है, आगे पथ पर पाँव बढ़ाओ,
आजादी वह मूर्ति नहीं है जो बैठी रहती मन्दिर मे,
उसकी पूजा करनी है तो नक्षत्रों से होड़ लगाओ।
हल्का फूल नहीं आजादी, वह है भारी जिम्मेदारी,
उसे उठाने को कंधों के, भुजदण्डों के, बल को तोलो।
एक और जंजीर तड़कती है, भारत माँ की जय बोलो।

☐ हरिवंशराय बच्चन

विराट आत्मा के गायक

आओ हम और निकट आएँ!
भाषा से परे आत्म-भाव
प्रेम जहाँ, वहाँ क्या दुराव ?
संस्कृति के सागर में नित्य ही नवीन लहर
लक्ष्य-मार्ग एक, किन्तु बन जाती विविध डगर,
कहीं व्यास-वाल्मीकि, कहीं कालिदास
कहीं माघ-हर्ष-बाण, कहीं चण्डिदास,
एक भारती, समस्त भारत है एक
एक सूर्य, एक चन्द्र, रश्मियाँ अनेक
बाहरी अनेकता,—
भीतर की एकता,
भिन्न-भिन्न सुरभि किन्तु ऋतुपति है एक
जीवित हम क्योंकि प्राणवन्त है विवेक,
महाभाव के समीप रही सदा भाषाएँ,
आओ, हम संग-संग आत्म-गीत गाएँ!
और निकट आएँ!!
मिथिला की सीता ही भारत की सीता
बन्धन में बँधी कहाँ कुरुक्षेत्र गीता
शिवगिरि से सागर तक
विष्णु-किरण चकमकचक,
जगमग स्वर्णिम विहान,
गुंजित चन्द्रिका-गान,
प्राण का प्रवाह एक
अन्तर की चाह एक
कंबन औ' तुलसी पर सबका अधिकार

विद्यापति, रविठाकुर सरसाते प्यार,
सजग हैं सदा से हम
नही कभी हममें भ्रम,
यात्रा का क्रम न भंग,
सारस्वत नित तरंग
भारत को वार-बार--
अर्पित नव नमस्कार,
साहित्यिक तीर्थाटन
भावों का भाव-मिलन,
ऊपर ही रणित रोर
भीतर भास्वर हिलोर,
अभिलाषा-सरणी पर गंगा-गोदावरी
कृष्णा में वज उठती यमुना की वसरी,
मिलता घन-ताण्डव में विद्युत-पार्वती-लास्य
भाषा में अनुरंजित भारत का भाव-भाष्य,

—इतने संचेतन हम
नहीं कभी स्थिर विभ्रम,

सिन्धु-पवन मलयगंध हिमगिरि पर बिखराता
श्वेत मंत्र-ध्वनि हिमाद्रि सागर पर फैलाता,

संस्कृति की वसुधा पर चिर अखंड भारत यह,
आओ, हम भावो में डुबकियाँ लगाएँ!
और निकट आएँ!!

हिन्दी के प्रांगण में भाषा-सम्मिलन-पर्व
संस्कृति के कारण ही भारत को शुभ्र गर्व,
व्याप्त दिग्दिगन्त में समरसता-माधुरी
ज्यों सुरम्य रास में माधव की वाँसुरी,
नर्तित रस-चक्र सुभग
ज्योतित मानवता-मग,
लज्जित संकीर्ण दृष्टि
नयनोदित नई सृष्टि,

उर में एकात्म-भाव—
एक मानवी प्रभाव—
कि—
तोड़ें हम वन्धन,
जोडे हम जीवन,
सार्थक साहित्य तभी
सम्मुख ही लक्ष्य अभी
संकल्पित सरस प्राण :
होगा ही समाधान
भाषाएँ वोलेंगी—
रूढि-ग्रंथि खोलेंगी,
युग से हम बोल रहे,
हृदय को टटोल रहे,
हे विराट् आत्मा के गति-प्रसन्न अनुगायक,
आओ, हम अपने को अब भी अपनाएँ !
और निकट आएँ !!

□ पोद्दार रामावतार अरुण

हिम्मत हो, तलवार हो

वढ़ो जवानों, तुम्हीं देश की
हिम्मत हो, तलवार हो
तुम्हीं देश की ग्राजादी के
रक्षक पहरेदार हो

कौन तुम्हारे सम्मुख ग्राये
किसमें दम तुमसे टकराये
ग्राग छिपाये छाती में तुम
भीपरग पारावार हो

तुमसे ही ग्राजाद वतन है
फूलों से गुलजार चमन है
तुम्ही जवानों की कुर्बानी
वीरों की ललकार हो

तुम जागे ग्रभिमान जगा है
सारा हिन्दुस्तान जगा है
तुम्हीं जागरण की ज्वाला हो
सुख सौरभ संसार हो

□ गोवर्धन प्रसाद 'सदय'

हे ! सजग प्रहरी सलाम

गाते हैं गीत सरहद पर, वह सुन्दर गीत है ।
लाज बचाना अपनी माँ की, सदियों से रीत है ॥

जो पूत न आये देश काम
वह पूत किस काम का ?
जो खून न आये देश काम
वह खून किस काम का ?

जीतेजी बाँधे कफ़न सिर, उसकी जीवन पर जीत है ।
गाते हैं गीत सरहद पर, वह सुन्दर गीत है ॥

हिम्मत से बढ़ता वीर
साहस से काम ले ।
खेलता है मौत से
दुश्मन को मात दे ॥

खेलता है खेल ऐसा, उसकी सच्ची जीत है ।
गाते है गीत सरहद पर, वह सुन्दर गीत है ॥

सजती है जिससे गोद माँ की
वह अमर साज है ।
जीतेजी रखता आन तिरंगा
उस पर सबको नाज है ॥

हे ! सजग प्रहरी सलाम सबका, हिन्दविल पर जीत है ।
गाते है गीत सरहद पर, वह सुन्दर गीत है ॥

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

नवीन कल्पना करो

निज राष्ट्र के शरीर के सिंगार के लिए—
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो,

तुम कल्पना करो

अब देश है स्वतन्त्र, मेदिनी स्वतंत्र है
मधुमास है स्वतन्त्र, चांदनी स्वतन्त्र है
हर दीप है स्वतन्त्र, रोशनी स्वतन्त्र है
अब शक्ति की ज्वलन्त दामिनी स्वतन्त्र है
लेकर अनन्त शक्तियां सद्य समृद्धि की—
तुम कामना करो, किशोर कामना करो,

तुम कामना करो

तन की स्वतन्त्रता चरित्र का निखार है
मन की स्वतन्त्रता विचार की बहार है
घर की स्वतन्त्रता समाज का सिंगार है
पर देश की स्वतन्त्रता अमर पुकार है
टूटे कभी न तार यह अमर पुकार का—
तुम साधना करो, अनन्त साधना करो,

तुम साधना करो

हम थे अभी-अभी गुलाम, यह न भूलना
करना पड़ा हमें सलाम, यह न भूलना
रोते फिरे उमर तमाम, यह न भूलना

था फूट का मिला इनाम, यह न भूलना
बीती गुलामियाँ न लौट आएँ फिर कभी
तुम भावना भरो, स्वतन्त्र भावना भरो,

तुम भावना भरो

है देश एक, लक्ष्य एक, कर्म एक है
चालीस कोटि है शरीर, मर्म एक है
पूजा करो, पढ़ो नमाज, धर्म एक है
बदनाम हो अगर स्वराज, शर्म एक है
चाहो कि एकता बनी रहे जनम-जनम—
तुम भेद ना करो, मनुष्य-भेद ना करो

तुम भेद ना करो

बगिया हरी-हरी, वसुन्धरा भरी-भरी
फिर क्यों रहे मनुष्य की दशा मरी-मरी
फैले कुटी-कुटी महल-महल, तरी-तरी
घर में बिरादरी, समाज मे बराबरी
ऐसा न हो कि कोटि-कोटि ही दुखी रहें—
तुम वेदना हरो, उदार वेदना हरो,

तुम वेदना हरो

लेकर दरिद्रता स्वतन्त्रता न चल सके
दीवार सामने खड़ी, दिया न जल सके
जो क्रान्ति से समाजवाद तक उछल सके
इतिहास दीन देश का वही बदल सके
घर-घर बनी बहार मुसकराय वह घड़ी—
तुम प्रार्थना करो, सदैव प्रार्थना करो,

तुम प्रार्थना करो

मुरझा रही कली-कली खिला दिया करो
बुझते हुए चिराग, झिलमिला दिया करो
जी लो मगर जहान को जिला दिया करो
तकदीर से गरीब को मिला दिया करो
सींचो धरा नहर-नहर उछाल कर—
तुम यातना हरो, असीम यातना हरो,

तुम यातना हरो

बढ़ती चले कतार देश की पुकार पर
धुन छेड़ दो नई, समष्टि के सितार पर
पीछे किया करो सिंगार द्वार-द्वार पर
पहले जले दिया शहीद के मजार पर
वे देश पर चढ़ा गये शरीर फूल सा—
तुम वन्दना करो, कृतज्ञ वन्दना करो,

तुम वन्दना करो

ओ देश की जवानियो, चलो उठो-उठो
इतिहास की निशानियो, चलो उठो-उठो
ओ खून की रवानियो, चलो उठो-उठो
संघर्ष की कहानियों, चलो उठो-उठो
हम जन्म लें स्वतन्त्र ही, स्वतन्त्र ही मरें—
तुम अर्चना करो, अमोघ अर्चना करो

तुम अर्चना करो

अधिकार लो, सदा न भीख माँगते रहो
संग्राम से जनम-जनम न भागते रहो
छाई घटा, चली हिलोर, जागते रहो
घर में कहीं घुसे न चोर, जागते रहो
अपने महान देश के कुशल बचाव को—
तुम योजना करो, सशस्त्र योजना करो,
तुम योजना करो

कुचली गयी स्वतन्त्रता कि फनफना उठो
अपमान देश का हुआ कि झनझना उठो
हमला अगर कहीं हुआ कि सनसना उठो
दुश्मन बढ़े कि आर-पार दनदना उठो
ससार भी अगर कही मुकाबला करे—
तुम सामना करो, समर्थ सामना करो,

तुम सामना करो

☐ गोपालसिंह नेपाली

संकल्प

अटल हिमालय मर्यादा पर,

हम भी अटल रहेंगे माँ !

कण-कण हिमकण गंगा यमुना,

श्रम-कण से सिंचेंगे माँ !

हर घाटी एक हल्दी घाटी,

कर बलिदान गुजरेंगे माँ !

हर आँचल में एक विंध्याचल,

हर कण को पूजेंगे माँ !

कितने सागर पाँव पड़े हैं,

रज का तिलक करेंगे माँ !

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

ऊँचा रहे निशान

हमारा ऊँचा रहे निशान !

वीरों की सन्तान, हमारा ऊँचा रहे निशान !
ऊँचा रहे निशान, हमारा ऊँचा रहे निशान !
हमारा ऊँचा रहे निशान !

आगे बढ़ना कर्म हमारा,
ऊपर चढ़ना धर्म हमारा,
टकराते है महाकाल से अपना सीना तान !
हमारा ऊँचा रहे निशान !

जो कोई आगे आयेगा,
चूर-चूर वो हो जायेगा,
हाथों में है बिजली, आँखो में आँधी-तूफान !
हमारा ऊँचा रहे निशान !

सीमा पर चढ आने वालो,
सोया शेर जगाने वालो,

भारत का बच्चा-बच्चा है फौलादी चट्टान !
हमारा ऊँचा रहे निशान !

ऊँचा रहे निशान
हमारा ऊँचा रहे निशान !

☐ विनोद रस्तोगी

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब एक दिन

मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब एक दिन
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन

मन मे है विश्वास
पूरा है विश्वास

होगी शान्ति चारों ओर एक दिन
नही डर किसी का आज के दिन

मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास

नहीं डर किसी का आज के दिन
हम चलेंगे साथ-साथ लेके हाथों मे हाथ
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन

मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास

हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन

☐ गिरिजा कुमार माथुर

बुलन्द हुई आवाज

बुलन्द हुई आवाज गगन में,
हम हैं चाँद सितारे।
नव-निर्माण की नववेला में,
फौलाद बनेंगे सारे।
हाथ फावड़ा और दरांती,
मेहनत का रंग ला रे।
हम सपनों के महल ढूँढ़ते,
यथार्थ बने कंगारे।
श्रमकण से इतिहास लिखेंगे
बन अटल ध्रुव सम तारे।

☐ हरदान हर्ष जयपुरिया

सुख बांटो

मिटे ग़रीबी भूखमरी,
कंगाली हो दूर।
मेरे भारत में फिर कोई,
रहे नहीं मज़बूर।

बांटो रे, भाई बांटो रे, सुख बांटो।

यह धरती है सबकी इस पर,
सबका है अधिकार।
सबके साथ निभाना होगा,
समता का व्यवहार।
मेहनत के माथे पर बांधें,
निर्माणों का सेहरा।
आज तोड़ना होगा हमको,
भेदभाव का घेरा।

बनी विषमता की खाई को पाटो रे।
बांटो रे, भाई-बांटो रे, सुख बांटो।

सींच स्नेह के जल से बोयें,
मानवता की फसलें।
उड़ने लगे पराग खुशी के,
आओ मिलकर हँसलें।
विकसित हों फिर नई पीढ़ियां,
ऐसा मौसम लायें।
छोड़ गगन के गीत धरा पर,
नूतन स्वर्ग बनायें।

गहरी जड़ें बुराई की, मिल काटो रे।
वांटो रे, भाई वांटो रे, सुख वांटो।

छिपे हुए हैं रूप वदल कर,
दुश्मन यहां अमन के।
पनप न जाये कही देखना,
अंकुर यहां दमन के।
झोपड़ियों में है अंधियारा,
आओ जगमग करदें।
इनके उजड़े जीवन में भी।
रंग प्यार का भर दें।

नफ़रत के कांटे राहों से, छांटो रे।
वांटो रे, भाई वांटो रे, सुख बांटो।

☐ ईश्वरलाल गारू 'दर्शक'

आजादी का बिगुल

बदली है जमाने की हवा तुम भी बदल जाओ,
हाथ आ नहीं सकता है गया वक्त सम्भल जाओ।

हिद्दत[1] मगर इस दर्जा रहे खूँ में कि मौसम,
गर बर्फ के साँचे में भी ढाले तो पिघल जाओ।

मेहनत के बलाखेज[2] समदर के निहंगो[3],
सरमाया की मछली को समूचा ही निगल जाओ।

आजादी-ए-कामिल[4] का आलम[5] हाथ में लेकर,
मैदाँ में बजाते हुए ईमाँ का बिगुल जाओ।

बरतानिया की मेज से कुछ रेजे गिरेंगे,
ऐ टोडियो! चुनने तुम उन्हें पेट के बल जाओ।

"आजादी की नज्में"

1. गर्मी 2. उपद्रवपूर्ण 3 घड़ियाल 4. पूर्ण स्वतन्त्रता 5. झण्डा

ख़ून की तड़प

क्या हवा चलती है तलवार दुधारा होकर
हौसला मुझको बचाएगा किनारा होकर।

कौम के वास्ते यह जान जो मिट जाएगी,
नाम चमकेगा मिरे बाद सितारा होकर।

मरके भी मिट्टी से निकलेगी सदा हाय वतन !
चल गई सीस पे बेदाद जो आरा होकर।

मरके भी दर्द न भारत का मिटेगा दिल से
ख़ून तड़पेगा मिरा जोश से पारा होकर।

☐ किशनचन्द 'ज़ेबा'

तुम्हारे लेखे

कुछ हुआ नहीं हो भले तुम्हारे लेखे ।

तुम भले भूल जाओ, मैं कैसे भूलूं
हथकड़ियों के शृंगार पहिन कर देखे ।

मैंने तो वे साम्राज्य मिटाकर देखे
कुछ हुआ नही हो भले तुम्हारे लेखे ।

मैं सह न सका उठ पड़ा चुनौती लेने
सिंहासन उस दिन मूंछ मरोड़ रहा था ।

ले कृषक और मजदूर तराजू अपनी
निर्लज्ज विदेशी रक्त निचोड़ रहा था ।

पैदल थे बस संकल्पों ही का रथ था
जीतें या हारें, सूली अपना पथ था ।

मैंने शत-शत मदहोश जगाकर देखे
कुछ हुआ नही हो भले तुम्हारे लेखे ।

यदि जरा देख पाता था साहस मेरा
परदेशी घातक मित्र बना है तेरा ।

मैं प्राण चढ़ाकर तुझे तार देता था
पिस्तौल उठाता और मार देता था ।

मेरे रुधिरों के चित्र सांस तूली थी,
बन रहा चित्र मां का था जब गोधूली थी ।

मेरी पीढ़ी जागृत-बलि थी, फली थी
प्रभुता के घर तो सिर्फ एक सूली थी।

युग अगर ठीकरा लेने से बच जाता
तो देश सहस्त्रों युग ठीकरे उठाता।

अब तुम पद-लोलुप देशभक्त अनदेखे
कुछ हुआ नहीं हो भले तुम्हारे लेखे।

☐ माखनलाल चतुर्वेदी

भारत है जान हमारी

भारत है जान हमारी और जान है तो सब कुछ
ईमान है हमारा ईमान है तो सब कुछ।

मिट्टी से जिसकी पलकर हम सब बड़े हुए हैं
इसके लिए मरेंगे यह शान है तो सब कुछ।

खंजर चले चले गर उफ भी नहीं करेंगे
परतन्त्रता में रहकर बस जान है तो सब कुछ।

आवे अजल भले ही फिर भी न हम डरेंगे
डरकर न हम हटेंगे यह आन है तो सब कुछ।

मज़हब जुदा है लेकिन अहले वतन सभी है
तन, प्राण, धन, वतन पर कुर्बान है तो सब कुछ।

मरना वतन पे सीखे जीना वतन पे सीखे
इंसान में अगर यह अरमान है तो सब कुछ।

☐ अज्ञात

घर जला भाई का

कौम के वास्ते कुछ करके दिखाया न गया
कौम का दर्द कभी उनसे मिटाया न गया।

चुगलियाँ लोगों की हुक्काम[1] से जाकर खाई
आईना कौम को हालत का दिखाया न गया।

शग्ले-मैनोशी[2] में गो लाखों करोड़ों खोए
कौम के सदके में पर कुछ भी दिलाया न गया।

क्या यही दर्द है 'खुरशीद' हमारे दिल में
घर जला भाई का और उठके बुझाया न गया।

☐ खुरशीद

1–शासक 2–मदिरा पान

वतन के वास्ते

क्या हुआ गर मर गये अपने वतन के वास्ते,
बुलबुलें कुरवान होती है वतन के वास्ते ।

तरस आता है तुम्हारे हाल पे, ऐ हिन्दियो,
गैर के मुहताज हो अपने कफन के वास्ते ।

देखते है आज जिसको शाद है, आजाद है,
क्या तुम्हीं पैदा हुए रंज-ओ-मिहन[1] के वास्ते ?

दर्द से अब विलविलाने का जमाना हो गया,
फिक्र करनी चाहिए मर्ज-कुहन[2] के वास्ते ।

हिन्दुओं को चाहिए कि कस्द[3] कावे का करें,
और फिर मुस्लिम वढ़े गग-ओ-जमन के वास्ते ।

☐ कुंवर प्रतापचन्द्र 'आजाद'

1–कष्ट और परिश्रम 2–पुराना रोग 3–संकल्प

निडर बढ़ो

सुनील आसमान है हरी भरी धरा,
रजत भरी निशीथिनी, दिवस कनक भरा,
खुली हुई जहान की किताब है पढ़ो,
बढ़ो बहादुरों, कदम मिला चलो बढ़ो।

चुनौतियाँ सदर्प वर्तमान दे रहा,
भविष्य अन्ध सिन्धु बीच नाव खे रहा,
भिड़ो पहाड़ से अलंघ्य शृंग पर चढ़ो,
विकृत स्वदेश का स्वरूप फिर नया गढ़ो।

विवेक, कर्म, श्रम, मिज्योति-दीप को जला,
प्रमाद, बुजदिली, विषाद हिम-शिला गला,
अजेय बालवीर ले शपथ निडर बढ़ो,
सुकीर्ति-दीप्ति से स्वदेश भाल को मढ़ो।

समाज-व्यक्ति, राष्ट्र-विश्व, शृंखला मिला,
अशेष भातृभाव शत कमल-विपिन खिला,
अटूट प्रेम-सेतु बाँधते हुए बढ़ो,
अखण्ड ऐक्य-केतु गाड़ते हुए बढ़ो।

☐ मक्खनसिंह 'सिसौदिया'

लोगों का विश्वास

अब तक मैंने बुना हृदय में
बस सपनों का ताना-बाना
अब तक मेरा काम रहा है
लोगों तक सपने पहुँचाना

अब उनके अनुकूल सत्य को जी न सका तो
लोगों का विश्वास सपन से उठ जायेगा।

अब तक केवल लिखने में ही
मैंने अपनी शक्ति लगायी
दुनियाँ के बेहतर ढांचे मे
लोगों की आसक्ति जगायी

अब यदि उनके संघर्षों में उतर न पाया
लोगों का विश्वास कलम से उठ जायेगा।

☐ राजकुमार पंत

माँ की दुआ

तेरे दम से फिर वतन वालों में पैदा हो हयात
पंज:-ए-अगियार[1] से हो हिन्द को हासिल नजात।

काम आ जाए वतन की राह मे तेरा शबाब
गैरतें जिन्दानियों की फिर उलट डालें निकाब।

तू बदल डाले निज़ामे-हिन्द के लैलो-नहार[2]
यह गुलाम आजाद हो आजाद मुल्कों मे शुमार।

आस्तीने-हिन्द हो तेरे लहू से लाला फाम[3]
बादशाहों का लकब पाने लगें हिन्दी गुलाम।

हड्डियाँ पिसकर बनें गाजा उरूसे-हिन्द[4] का
हुस्न फिर हो जाय कुछ ताजा उरूसे-हिन्द का।

तेरे होटों से बवक्ते-मर्ग[5] यह निकले सदा
नौजवानाने-वतन आगे बढ़ो आगे जरा।

☐ अल्ताफ मशहदी

1-दूसरो का [अंग्रेजो का] पंजा 2-दिन-रात 3-लाल 4-भारत-रूपी वधू
5-मृत्यु के समय